CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2023 with Solution PDF-Set 2/5/3

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 13 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 2 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. सनातन काल से ही भारत में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट किए जाने का उल्लेख मिलता है। इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे।

भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। अत: भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थ में मानवता की संस्कृति कहा जा सकता है। योग हमें वैज्ञानिकता के साथ समग्र जीवन-शैली के प्रति जागरूक करता है, जिससे जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। साथ ही, इससे न केवल शांतिप्रिय जीवन पद्धति को बढ़ावा मिलता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के साथ मानवतापूर्ण संबंध स्थापित करने का संदेश भी प्राप्त होता है। भारत ने योग को हमेशा से सीमा, संस्कृति और भाषा से ऊपर रखा है। इसे यदि सही तरीके से समझा जाए और नियमित अभ्यास किया जाए, तो कई समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। 'योग' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'युज्' शब्द से हुई है, जिसका तात्पर्य जोड़ना एवं एकीकरण करने से है। आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ है, आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन और व्यावहारिक स्तर पर योग को शरीर, मन और भावनाओं को संतुलित करने तथा सामंजस्य बनाए रखने का एक साधन माना जाता है।

कोरोना काल में न केवल भारत, बल्कि वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता को देखा और जाना कि योग तनाव घटाता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। यह प्राचीन विद्या है और जीवन को नीरोगी रखने की एक दिव्य विद्या है। कोरोना काल में हम सभी ने अनुभव किया है कि योग हमें भयमुक्त, भाव में जीना सिखाता है। योग स्वस्थ और सुखी रहने के लिए अद्भुत प्रभावी विधि है, इसलिए घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए। योग सदाबहार है, रामबाण है, योग संजीवनी है। योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। हम योग को एक टोल फ्री नम्बर की तरह उपयोग कर सकते हैं। जिस प्रकार टोल फ्री नम्बर को कोई भी, कहीं से, कभी भी डायल कर सकता है, उसी प्रकार योग भी है। जब तन-मन के लिए सच्चे मन से जागिए, तभी योग साकार हो जाता है। योग के माध्यम से हम जितने गहरे उतरेंगे, उतने शांत होंगे और पाएँगे कि अशांत करने वाले सारे तत्त्वों की धीरे-धीरे पहचान हो रही है और घने अंधेरे की जगह प्रकाश ले रहा है तथा जीवन निरंतर आनंदमय हो रहा है। समस्या शारीरिक हो या फिर पर्यावरण की, इनका समाधान है योग। आज बढ़ते प्रदूषण का समाधान केवल प्रकृतिमय जीवन पद्धति और सतत तथा सुरक्षित विकास में निहित है। यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है। अत: योग को आत्मसात कर हम स्वस्थ प्रकृतिमय जीवन जी सकते हैं। [10 अंक]

1(i). भारतीय संस्कृति को मानवता की संस्कृति कहे जाने का क्या आधार है ? [1 अंक]

(A) समस्त मानव जाति को आश्रय देने की भावना

(B) संसार की सबसे प्राचीन संस्कृति होना

(C) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना

(D) समस्त मानव जाति को योग की शिक्षा देना

सही उत्तर: (C) समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश में स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति और दर्शन किसी देश या जाति के लिए नहीं, बल्कि समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए हैं। इसी सार्वभौमिक दृष्टि के कारण उसे मानवता की संस्कृति कहा गया है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (A) में आश्रय देने की बात है, जो यहाँ आधार नहीं है। (B) में प्राचीनता है, जबकि प्रश्न मानवता कहे जाने का कारण पूछता है। (D) योग की शिक्षा तक सीमित है; गद्यांश का आधार व्यापक मानव-कल्याण है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : समस्त मानव जाति के प्रति कल्याण की भावना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(ii). आध्यात्मिक स्तर पर योग साधन है – [1 अंक]

(A) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का

(B) आत्मा का शरीर और मन से मिलन का

(C) आत्मा का मन और मस्तिष्क से मिलन का

(D) आत्मा का व्यक्ति और समाज से मिलन का

सही उत्तर: (A) आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन का

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें लेखक आध्यात्मिक स्तर पर जुड़ने का अर्थ आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन बताता है। इसलिए यहाँ चेतना के व्यापक स्वरूप से आत्मा का संबंध ही निर्णायक है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (B) शरीर और मन से मिलन बताता है तथा (C) मन और मस्तिष्क से; ये आध्यात्मिक परिभाषा नहीं हैं। (D) व्यक्ति और समाज के संबंध की बात करता है। व्यावहारिक स्तर पर शरीर, मन और भावनाओं का संतुलन अलग से बताया गया है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलन।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(iii). कोरोना काल में लोगों को किसके महत्त्व का ज्ञान हुआ ? [1 अंक]

(A) अच्छे स्वास्थ्य का

(B) योग के महत्त्व का

(C) चिकित्सकों का

(D) पेड़-पौधों का

सही उत्तर: (B) योग के महत्त्व का

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश कहता है कि कोरोना काल में भारत ही नहीं, वैश्विक स्तर पर सभी ने योग की महत्ता देखी और जानी। इसके बाद तनाव घटने और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ने के लाभ दिए गए हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (A) अच्छा स्वास्थ्य योग का लाभ है, लेकिन पूछे गए वाक्य का सीधा उत्तर नहीं है। (C) चिकित्सकों तथा (D) पेड़-पौधों के महत्त्व का इस प्रसंग में उल्लेख नहीं है। महामारी के सामान्य अनुभव के बजाय गद्यांश के स्पष्ट कथन को आधार बनाना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : योग के महत्त्व का।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(iv). योग को संजीवनी क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) विश्व में भारत की पहचान बनाने के कारण

(B) संसार की प्राचीनतम विद्या होने के कारण

(C) ऋषि-मुनियों द्वारा महत्त्व दिए जाने के कारण

(D) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण

सही उत्तर: (D) शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें योग को संजीवनी कहने के तुरंत बाद लेखक बताता है कि योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। संजीवनी का संकेत जीवन को स्वस्थ और ऊर्जावान बनाए रखने की प्रभावी क्षमता की ओर है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (A) भारत की विश्व में पहचान, (B) प्राचीनता और (C) ऋषि-मुनियों द्वारा महत्त्व दिए जाने से संजीवनी का आशय स्पष्ट नहीं होता। ये कारण स्वास्थ्य प्रदान करने वाले उस प्रभाव को नहीं बताते जिस पर संबंधित अनुच्छेद बल देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : शरीर को स्वस्थ बनाने के महत्त्व के कारण।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(ix). योग शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ प्रेरणा भी देता है – [1 अंक]

(A) सादा जीवन उच्च विचार रखने का

(B) समस्त विश्व को परस्पर जोड़ने का

(C) समस्त मानव मात्र के कल्याण का

(D) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का

सही उत्तर: (D) प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश के अंत में बढ़ते प्रदूषण का समाधान प्रकृतिमय जीवन-पद्धति तथा सतत और सुरक्षित विकास में बताया गया है। लेखक स्पष्ट करता है कि यह संदेश योग के माध्यम से जीवन में आता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (A) का सादा जीवन उच्च विचार यहाँ कही गई विशिष्ट प्रेरणा नहीं है। (B) में विश्व को जोड़ने तथा (C) में मानव-कल्याण का व्यापक विचार है, पर शरीर के स्वास्थ्य के साथ पूछी गई प्रेरणा अंतिम पंक्तियों में प्रकृति के अनुकूल जीवन अपनाना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : प्रकृतिमय जीवन-पद्धति अपनाने का।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(v). टोल फ्री नंबर से क्या अभिप्राय है ? [1 अंक]

(A) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(B) मनोरंजन के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(C) खरीददारी के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

(D) शिकायत दर्ज कराने के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

सही उत्तर: (A) संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें टोल फ्री नंबर ऐसा फोन नंबर है जिसके उपयोग के लिए कॉल करने वाले को शुल्क नहीं देना पड़ता। गद्यांश में इसे कोई भी, कहीं से, कभी भी डायल कर सकने की बात करके योग की सुलभता समझाई गई है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (B) मनोरंजन, (C) खरीददारी और (D) शिकायत दर्ज कराने तक अर्थ को सीमित करते हैं। ऐसे नंबर इन कार्यों में उपयोग हो सकते हैं, लेकिन ये उसका सामान्य अर्थ नहीं हैं। (A) में संचार-सेवा का व्यापक अर्थ है, इसलिए वही उपयुक्त परिभाषा है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : संचार-सेवा के लिए उपलब्ध नि:शुल्क फोन नंबर।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(vi). योग और टोल फ्री नंबर में क्या समानता नहीं है ? [1 अंक]

(A) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

(B) दोनों का लाभ कभी भी प्राप्त किया जा सकता है।

(C) दोनों का लाभ कोई भी प्राप्त कर सकता है।

(D) दोनों का लाभ कहीं भी प्राप्त किया जा सकता है।

सही उत्तर: (A) दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें गद्यांश की तुलना में कोई भी, कहीं से, कभी भी उपयोग कर सकता है कहा गया है। इसका अर्थ सुविधा की उपलब्धता है; इससे यह सिद्ध नहीं होता कि प्रत्येक व्यक्ति वास्तव में उसका लाभ ले ही रहा है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (B) कभी भी, (C) कोई भी और (D) कहीं भी लाभ प्राप्त कर सकने की संभावनाएँ हैं; तीनों तुलना के अनुरूप हैं। (A) प्राप्त किया जा रहा है कहकर सबके वास्तविक उपयोग का दावा करता है। यही दावा गद्यांश में नहीं है, अत: वही समानता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (A) है : दोनों का लाभ सबके द्वारा प्राप्त किया जा रहा है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(vii). गद्यांश के आधार पर प्राचीनकाल में लोगों के नीरोग और दीर्घजीवी होने का क्या कारण था ? [1 अंक]

(A) शुद्ध सात्विक भोजन ग्रहण करना

(B) शुद्ध प्राकृतिक वातावरण का होना

(C) खूब शारीरिक परिश्रम करना

(D) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना

सही उत्तर: (D) योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें पहले अनुच्छेद में योग द्वारा शरीर, मन और मस्तिष्क को पुष्ट करने का उल्लेख है। इसके तुरंत बाद इसलिए लोग नीरोग और दीर्घजीवी होते थे कहा गया है। इसलिए योगाभ्यास और स्वस्थ दीर्घ जीवन में कारण-परिणाम का संबंध स्पष्ट है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें (A) सात्विक भोजन, (B) प्राकृतिक वातावरण तथा (C) शारीरिक परिश्रम सामान्य रूप से लाभकारी हो सकते हैं, लेकिन दिए हुए अनुच्छेद में नीरोग और दीर्घजीवी होने का कारण ये नहीं बताए गए हैं। प्रश्न गद्यांश के आधार पर उत्तर चाहता है, इसलिए योग ही चुनना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : योग को जीवन का प्रमुख अंग बनाना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(viii). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

(क) योग तनाव घटाता है।

(ख) रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

(ग) योग सभी समस्याओं का समाधान है।

ऊपर लिखित कथनों में से कौन सा / कौन से सही है / हैं ? [1 अंक]

(A) केवल (क)

(B) केवल (ग)

(C) (क) और (ख)

(D) (ख) और (ग)

सही उत्तर: (C) (क) और (ख)

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश पर आधारित प्रश्न में उत्तर का प्रमाण दिए हुए कथन और उसके प्रसंग से लेना चाहिए।
- विकल्प का अर्थ प्रश्न के ठीक अनुरूप होना चाहिए; व्यापक अनुमान और पाठ का स्पष्ट कथन अलग-अलग हैं।

चरण 1: गद्यांश में उत्तर का आधार पहचानें कोरोना काल वाले अनुच्छेद में सीधे कहा गया है कि योग तनाव घटाता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। इसलिए कथन (क) तथा (ख) दोनों गद्यांश से प्रमाणित हैं।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें कथन (ग) में सभी समस्याओं का समाधान कहकर दावा निरपेक्ष बना दिया गया है। गद्यांश कई

समस्याओं तथा शारीरिक और पर्यावरण संबंधी समस्याओं का उल्लेख करता है; इससे हर प्रकार की सभी समस्याओं का निष्कर्ष नहीं निकलता। अतः (A) अधूरा है और (B), (D) में अतिव्यापक कथन (ग) शामिल है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : (क) और (ख)।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के मुख्य शब्द को संबंधित पंक्ति से मिलाएँ और संभावना तथा वास्तविक स्थिति में अंतर देखकर विकल्प चुनें।

1(x). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : घर-घर, हर घट, हर घाट पर योग होना चाहिए।

कारण (R) : योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(B) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।

(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।

(D) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण के सत्य होने के साथ उनके व्याख्यात्मक संबंध की जाँच आवश्यक है।
- उत्तर के लिए दिए गए अंश के कथ्य और शब्दों को आधार बनाया जाता है।

चरण 1: कथन का परीक्षण गद्यांश में योग को स्वस्थ और सुखी रहने की प्रभावी विधि बताकर घर-घर, हर घट और हर घाट पर योग होने की अपेक्षा की गई है। इसलिए कथन (A) सही है। इसका आशय है कि योग का लाभ व्यापक रूप से सभी तक पहुँचना चाहिए।

चरण 2: कारण का परीक्षण गद्यांश स्पष्ट कहता है कि योग से तन स्वस्थ और मन विकार-मुक्त होता है। अतः कारण (R) भी सही है। शरीर और मन पर पड़ने वाले ये लाभ योग की उपयोगिता बताते हैं।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प जब योग शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक निर्मलता प्रदान करता है, तब उसका अभ्यास सर्वत्र करने की बात उचित है। यही लाभ कथन का कारण है। (B) कथन को गलत बताता है, (C) दोनों को गलत कहता है और (D) सही व्याख्या को नकारता है; अतः ये विकल्प असंगत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कथन-कारण में दोनों की सत्यता जाँचने के बाद देखें कि कारण कथन के लिए आधार भी देता है या नहीं।

2(a). प्रतीक्षा की
बहुत जोही बाट
जेठ बीता, हुई वर्षा नहीं, नभ यों रहा खल्वाट
आज है आषाढ़ वदि षष्ठी
उठा था ज़ोर का तूफ़ान
उसके बाद
सघन काली घन घटा से
हो रहा आच्छन्न यह आकाश
आज होगी, सजनि, वर्षा-हो रहा विश्वास
हो रही है अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास
किंतु अपने देश में तो
सुमुखि, वर्षा हुई होगी एक क्या, कै बार
गा रहे होंगे मुदित हो लोग ख़ूब मलार
भर गई होगी अरे वह वाग्मती की धार
उगे होंगे पोखरों में कुमुद पद्म मखान
आँख मूँदे कर रहा मैं ध्यान
लिखूँ क्या प्रेयसि, यहाँ का हाल
सामने ही बह रही भागीरथी, बस यही है कल्याण
जिस किसी भाँति गर्मी से बचे हैं प्राण
आज उमड़ी घन घटा को देख
मन यही करता कि मैं भी, प्रियतमे, उसका करूँ आह्वान
– कालिदास समान
सामने सरपट पड़ा मैदान
है न हरियाली किसी भी ओर
तृण-लता तरुहीन
नग्न प्रांतर देख
उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द
हरा धुँधला या कि नीला –
आ रहा चश्मा न कोई काम
किंतु मुझको हो रहा विश्वास
यहाँ भी बादल बरसने जा रहा है आज
अब न सिर में उठेगा फिर दर्द
गंगा नहाते वक़्त
आया ख्याल
हिमालय में गल रही है बर्फ़ :
आज होगा ग्रीष्म ऋतु का अंत [5 अंक]

2(a)(i). 'आज वर्षा होगी' कवि के इस अति विश्वास का आधार क्या है ? [1 अंक]

(A) जेठ मास का समाप्त होना

(B) आषाढ़ मास का आगमन

(C) धरती का प्रसन्न होना

(D) आकाश में काले बादलों का घिर आना

सही उत्तर: (D) आकाश में काले बादलों का घिर आना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर पद्यांश के शब्दों तथा उनके निकटवर्ती प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प वह है जो पंक्ति के पूरे आशय को व्यक्त करे और पाठ में प्रमाणित हो।

चरण 1: वर्षा के विश्वास का आधार कवि कहता है कि तेज तूफ़ान के बाद आकाश सघन काली घटा से आच्छन्न हो गया है। इसके तुरंत बाद वह वर्षा होने का विश्वास व्यक्त करता है। अतः विश्वास का प्रत्यक्ष आधार आकाश में उमड़े काले बादल हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) सही नहीं है, क्योंकि जेठ बीतने पर भी वर्षा नहीं हुई थी। (B) में केवल महीने का आगमन है, जो वर्षा का सुनिश्चित संकेत नहीं है। (C) धरती की प्रसन्नता इस वातावरण की प्रतिक्रिया है; विश्वास का सीधा आधार बादलों का घिरना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : आकाश में काले बादलों का घिर आना।

त्वरित सुझाव: पूछी गई पंक्ति के पहले और बाद के शब्द पढ़कर उसके आशय से पूरी तरह मेल खाने वाला विकल्प चुनें।

2(a)(ii). 'उठ रहा सिर में बड़ा ही दर्द' – पंक्ति के संदर्भ में कवि के सिर में उठने वाले दर्द का कारण क्या है ? [1 अंक]

(A) उसके स्वास्थ्य का ठीक न होना

(B) समय पर वर्षा न होना

(C) हरियाली विहीन प्रांतर का होना

(D) भागीरथी में पानी कम होना

सही उत्तर: (C) हरियाली विहीन प्रांतर का होना

हल:

अवधारणा:

- उत्तर पद्यांश के शब्दों तथा उनके निकटवर्ती प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प वह है जो पंक्ति के पूरे आशय को व्यक्त करे और पाठ में प्रमाणित हो।

चरण 1: सिरदर्द का प्रसंग कवि सामने पड़े मैदान में किसी ओर हरियाली नहीं देखता। वह उसे तृण, लता और तरु से रहित नग्न प्रांतर कहता है। इसी दृश्य के तुरंत बाद सिर में दर्द उठने की बात आती है, इसलिए कारण हरियाली विहीन मैदान का होना है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में अस्वस्थता का सामान्य अनुमान है, जिसका कविता में प्रमाण नहीं है। (B) वर्षा का न होना व्यापक पृष्ठभूमि है, पर इस पंक्ति का सीधा संदर्भ उजाड़ प्रांतर है। (D) गलत है, क्योंकि भागीरथी में पानी कम होने का उल्लेख नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (C) है : हरियाली विहीन प्रांतर का होना।

त्वरित सुझाव: पूछी गई पंक्ति के पहले और बाद के शब्द पढ़कर उसके आशय से पूरी तरह मेल खाने वाला विकल्प चुनें।

2(a)(iii). 'हो रहा आच्छन्न यह आकाश' – पंक्ति में 'आच्छन्न' शब्द का अर्थ है – [1 अंक]

(A) दबा हुआ

(B) ढका हुआ

(C) फैला हुआ

(D) बिखरा हुआ

सही उत्तर: (B) ढका हुआ

हल:

अवधारणा:

- उत्तर पद्यांश के शब्दों तथा उनके निकटवर्ती प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प वह है जो पंक्ति के पूरे आशय को व्यक्त करे और पाठ में प्रमाणित हो।

चरण 1: प्रसंगानुसार शब्दार्थ कवि ने सघन काली घटाओं के कारण आकाश को आच्छन्न कहा है। बादल आकाश को ढक रहे हैं। इसलिए इस प्रसंग में आच्छन्न का सटीक अर्थ ढका हुआ है; शब्दार्थ की पुष्टि उसके ठीक पहले आए बादलों के वर्णन से होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) दबा हुआ में दबाव का भाव है, जो यहाँ नहीं है। (C) फैला हुआ बादलों की स्थिति का संकेत दे सकता है, किंतु आच्छन्न का अर्थ नहीं है। (D) बिखरा हुआ सघन घटा से ढके आकाश के विपरीत स्थिति बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (B) है : ढका हुआ।

त्वरित सुझाव: पूछी गई पंक्ति के पहले और बाद के शब्द पढ़कर उसके आशय से पूरी तरह मेल खाने वाला विकल्प चुनें।

2(a)(iv). शहरी मैदान को कवि ने 'नग्न' क्यों कहा है ? [1 अंक]

(A) तृण विहीन होने के कारण

(B) लता विहीन होने के कारण

(C) तरुहीन होने के कारण

(D) वनस्पतिहीन होने के कारण

सही उत्तर: (D) वनस्पतिहीन होने के कारण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर पद्यांश के शब्दों तथा उनके निकटवर्ती प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प वह है जो पंक्ति के पूरे आशय को व्यक्त करे और पाठ में प्रमाणित हो।

चरण 1: नग्न प्रांतर का आशय कवि मैदान को तृण-लता तरुहीन बताता है और कहता है कि किसी ओर हरियाली नहीं है। तृण घास को, लता बेल को और तरु वृक्ष को कहते हैं। इन सभी के अभाव से मैदान वनस्पति के आवरण से रहित है, इसलिए उसे नग्न कहा गया है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में केवल घास का अभाव है, (B) में केवल बेलों का और (C) में केवल वृक्षों का अभाव है। ये तीनों विकल्प कथन के एक-एक हिस्से को बताते हैं। (D) में वनस्पतिहीनता इन सभी अभावों को समेटती है, इसलिए यही पूर्ण अर्थ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : वनस्पतिहीन होने के कारण।

त्वरित सुझाव: पूछी गई पंक्ति के पहले और बाद के शब्द पढ़कर उसके आशय से पूरी तरह मेल खाने वाला विकल्प चुनें।

2(a)(v). 'हो रही अवनि पुलकित, ले रही नि:श्वास' – काव्य पंक्ति में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) अनुप्रास

(B) रूपक

(C) यमक

(D) मानवीकरण

सही उत्तर: (D) मानवीकरण

हल:

अवधारणा:

- उत्तर पद्यांश के शब्दों तथा उनके निकटवर्ती प्रसंग से निर्धारित करना चाहिए।
- सही विकल्प वह है जो पंक्ति के पूरे आशय को व्यक्त करे और पाठ में प्रमाणित हो।

चरण 1: मानवीकरण की पहचान अवनि का अर्थ धरती है। पंक्ति में धरती को पुलकित होते और नि:श्वास लेते दिखाया गया है। पुलकित होना और साँस लेना जीवित मनुष्य की क्रियाएँ हैं। प्रकृति पर इन मानवीय भावों और क्रियाओं का आरोप मानवीकरण कहलाता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) अनुप्रास में वर्ण की आवृत्ति प्रमुख होती है; यहाँ मुख्य सौंदर्य धरती की मानवीय अवस्था है। (B) रूपक में उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप होता है, जो यहाँ नहीं है। (C) यमक में एक शब्द की आवृत्ति अलग अर्थों में होती है; यहाँ वैसा प्रयोग नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही उत्तर (D) है : मानवीकरण।

त्वरित सुझाव: पूछी गई पंक्ति के पहले और बाद के शब्द पढ़कर उसके आशय से पूरी तरह मेल खाने वाला विकल्प चुनें।

अथवा

2(b). मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता
तो बस्ती-बस्ती में फिरता रहता
सुंदर नद-नालों का यार होता
मस्ती में अपनी झूमता रहता। मैं भी अगर .....
आदमी का गुण मुझ में न होता
ईर्ष्या की आग में न जलता होता
स्वार्थ के युद्ध में न मरता-मारता
बंब-मिसाइल की वर्षा न करता। मैं भी अगर .....
आँख में दौलत का काजल न पुतता
शान के लिए पराया माल न हड़पता
हर मानव मेरा हित-बंदु होता
रंग-रूप पर अपना गर्व न करता। मैं भी अगर .....
तब सारा जग मेरा अपना होता
पासपोर्ट-वीज़ा कोई न खोजता
स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता
विश्व-भर में मेरा अपना राज्य होता। मैं भी अगर .....
प्यार के गीत जन-जन को सुनाता
आवाज से अपनी सब को लुभाता
मानवता की वेदी पर सिर झुकाता
सागर-उर्मिल का झूला झुलाता
मैं भी अगर एक छोटा पंछी होता।। [5 अंक]

2(b)(i). पंछी के रूप में कवि की क्या अभिलाषा है ? [1 अंक]

(A) समस्त विश्व पर राज्य करने की

(B) समस्त विश्व का भ्रमण करने की

(C) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की

(D) समस्त वन-प्रदेश में स्वतंत्र घूमने की

सही उत्तर: (C) समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की

हल:

अवधारणा:

- कवि की इच्छा का निर्णय पूरी कविता के मूल संदेश से होता है।
- काव्यांश की स्पष्ट पंक्तियों और पूरे प्रसंग से अर्थ निश्चित करें; केवल शब्द के सामान्य अर्थ पर निर्भर न रहें।

चरण 1: कवि की सकारात्मक इच्छा कवि पंछी बनकर प्यार के गीत जन-जन को सुनाना और अपनी आवाज से सबको लुभाना चाहता है। वह प्रत्येक मानव को अपना हितैषी मानता है और मानवता के सामने सिर झुकाने की इच्छा रखता है। इससे उसके सपने का केंद्र प्रेम और अपनापन बनते हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच (A) राज्य करने को सत्ता स्थापित करने की इच्छा मानना कविता की भावना के विरुद्ध है। (B) विश्व-भ्रमण तथा (D) वन में स्वतंत्र घूमना कविता में आए सहायक चित्र हैं। वे संपूर्ण आकांक्षा नहीं बताते। (C) विश्व में प्रेम-प्रसार कविता के मानवीय और व्यापक संदेश को सबसे अच्छी तरह व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि की अभिलाषा समस्त विश्व में प्रेम-प्रसार करने की है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: अभिलाषा पूछे जाने पर प्यार के गीत और मानवता वाली पंक्तियों को केंद्रीय प्रमाण बनाएँ।

2(b)(ii). 'आदमी का गुण मुझमें होता' – पंक्ति में निहितार्थ 'गुण' से कवि का अभिप्राय है [1 अंक]

(A) आदमी में विद्यमान अवगुण

(B) आदमी में विद्यमान अच्छाइयाँ

(C) आदमी में विद्यमान मानवता की भावना

(D) आदमी में विद्यमान परोपकार की भावना

सही उत्तर: (A) आदमी में विद्यमान अवगुण

हल:

अवधारणा:

- संदर्भ में प्रयुक्त प्रशंसात्मक शब्द कभी व्यंग्य से विपरीत अर्थ देता है।
- काव्यांश की स्पष्ट पंक्तियों और पूरे प्रसंग से अर्थ निश्चित करें; केवल शब्द के सामान्य अर्थ पर निर्भर न रहें।

चरण 1: गुण शब्द का प्रसंग कवि आदमी का गुण अपने में न होने की इच्छा के तुरंत बाद ईर्ष्या, स्वार्थ के युद्ध और बम-मिसाइल की वर्षा से बचने की बात कहता है। आगे धन का लोभ, दूसरे का माल हड़पना और रंग-रूप का गर्व भी अस्वीकार करता है। ये सभी अच्छाइयाँ नहीं, मनुष्य के दुर्गुण हैं।

चरण 2: व्यंग्यार्थ के अनुसार विकल्प इसलिए गुण शब्द यहाँ व्यंग्य में आया है और (A) आदमी में विद्यमान अवगुण को दर्शाता है। (B) अच्छाइयाँ उसका सामान्य शब्दकोशीय अर्थ है, किंतु इस प्रसंग में लागू नहीं होता। (C) मानवता और (D) परोपकार को कवि त्यागना नहीं चाहता; वह तो मानवता का समर्थक है।

चरण 3: निष्कर्ष गुण से कवि का अभिप्राय आदमी में विद्यमान अवगुण है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: गुण का सामान्य अर्थ लेने से पहले उसके बाद दी गई ईर्ष्या और स्वार्थ की सूची पढ़ें।

2(b)(iii). प्रस्तुत काव्यांश में कवि समर्थक है [1 अंक]

(A) भ्रमण, हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार का

(B) भ्रमण, अहिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का

(C) शांति, हिंसा, ईमानदारी और शानो-शौकत का

(D) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

सही उत्तर: (D) शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का

हल:

अवधारणा:

- कवि जिन बुराइयों का निषेध करता है, उनसे उसके समर्थित मूल्य स्पष्ट होते हैं।
- काव्यांश की स्पष्ट पंक्तियों और पूरे प्रसंग से अर्थ निश्चित करें; केवल शब्द के सामान्य अर्थ पर निर्भर न रहें।

चरण 1: स्वीकृत मूल्यों का आधार कवि युद्ध और बम-मिसाइल की वर्षा से दूर रहना चाहता है, जिससे शांति और अहिंसा का समर्थन प्रकट होता है। पराया माल न हड़पना ईमानदारी का संकेत है। प्रत्येक मानव को अपना मानना, प्यार के गीत सुनाना और मानवता को प्रणाम करना विश्व-बंधुत्व की भावना है।

चरण 2: मिश्रित गलत विकल्प पहचानना (A) में हिंसा, भ्रष्टाचार और अहंकार आते हैं, जिन्हें कवि नकारता है। (B) में अहिंसा तथा ईमानदारी होने पर भी शानो-शौकत का समर्थन गलत है। (C) में हिंसा और शानो-शौकत दोनों कविता की भावना के विपरीत हैं। केवल (D) के चारों मूल्य कविता के संदेश से मेल खाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि शांति, अहिंसा, ईमानदारी और विश्व-बंधुत्व का समर्थक है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: मूल्यों के संयुक्त विकल्प में हर शब्द जाँचें; एक भी हिंसा या शान वाला शब्द उसे गलत बना देगा।

2(b)(v). 'सागर-उर्मिल का झूला झुलाता है' – पंक्ति के रेखांकित अंश में कौन-सा अलंकार है ? [1 अंक]

(A) रूपक

(B) उत्प्रेक्षा

(C) मानवीकरण

(D) अतिश्योक्ति

सही उत्तर: (A) रूपक

हल:

अवधारणा:

- रूपक में उपमेय और उपमान में भेद हटाकर एक का दूसरे पर आरोप किया जाता है।
- काव्यांश की स्पष्ट पंक्तियों और पूरे प्रसंग से अर्थ निश्चित करें; केवल शब्द के सामान्य अर्थ पर निर्भर न रहें।

चरण 1: रेखांकित बिंब को समझना सागर-उर्मिल के प्रसंग में समुद्र की लहरों के हिलने-डुलने को झूले के रूप में देखा गया है। कवि लहरों की गति और झूले की गति के बीच साम्य को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि लहरों का झूला ही बन जाता है। यह सीधा आरोप रूपक का आधार है।

चरण 2: शेष विकल्पों का अंतर (B) उत्प्रेक्षा में किसी रूप की संभावना व्यक्त होती है, प्रायः मानो या जैसे संकेत मिलते हैं। (C) मानवीकरण में जड़ प्रकृति को मानव-क्रिया दी जाती है; प्रश्न विशेष रूप से रेखांकित काव्य-बिंब पर केंद्रित है। (D) अतिशयोक्ति में बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होता है। यहाँ प्रमुख विधान (A) रूपक है।

चरण 3: निष्कर्ष रेखांकित अंश में रूपक अलंकार है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: लहरों को झूले के रूप में सीधे प्रस्तुत करने पर ध्यान दें; संभावना या बढ़ा-चढ़ाकर कथन न खोजें।

2(b)(vi). 'स्वच्छन्द वन-वन में घूमता होता' पंक्ति में आए 'स्वच्छन्द' शब्द का पर्यायवाची नहीं है – [1 अंक]

(A) आज़ाद

(B) निरंकुश

(C) मुक्त

(D) नियंत्रित

सही उत्तर: (D) नियंत्रित

हल:

अवधारणा:

- पर्यायवाची का चयन शब्द के मूल अर्थ और प्रश्न के निषेध के अनुसार करें।
- काव्यांश की स्पष्ट पंक्तियों और पूरे प्रसंग से अर्थ निश्चित करें; केवल शब्द के सामान्य अर्थ पर निर्भर न रहें।

चरण 1: स्वच्छन्द का मूल अर्थ स्वच्छन्द का अर्थ अपनी इच्छा से चलने वाला, बंधन से मुक्त या स्वतंत्र है। कविता में वन-वन में घूमने के साथ इसका प्रयोग पंछी की आजादी बताता है। उसे बाहरी नियंत्रण या रोक-टोक के बिना विचरण करने की सुविधा प्राप्त है।

चरण 2: नहीं शब्द के अनुसार विकल्प जाँचना (A) आज़ाद और (C) मुक्त सीधे स्वतंत्रता का अर्थ देते हैं। (B) निरंकुश में नियंत्रण से रहित होने का भाव है, इसलिए यह भी स्वच्छन्द के निकटार्थ में आता है। (D) नियंत्रित का अर्थ किसी सीमा, नियम या नियंत्रण में बँधा हुआ है। यह अपेक्षित अर्थ के विपरीत है।

चरण 3: निष्कर्ष स्वच्छन्द का पर्यायवाची नियंत्रित नहीं है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के नहीं शब्द को रेखांकित करें और स्वतंत्रता के विपरीत अर्थ वाला नियंत्रित चुनें।

3(i). मुद्रित माध्यमों की विशेषता के संबंध में इनमें से कौन-सा कथन असत्य है ? [1 अंक]

(A) पाठकों के भाषा, ज्ञान, शैक्षिक-योग्यता का ध्यान रखा जाता है।

(B) यह चिंतन, विचार और विश्लेषण का माध्यम है।

(C) यह लिखित भाषा का विस्तार है।

(D) यह छपे हुए शब्दों का स्थायित्व है।

सही उत्तर: (A) पाठकों के भाषा, ज्ञान, शैक्षिक-योग्यता का ध्यान रखा जाता है।

हल:

अवधारणा:

- मुद्रित माध्यम की विशेषता और उसके लेखन की सीमा या आवश्यकता में अंतर किया जाता है।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: पाठकों की योग्यता से जुड़ी आवश्यकता विकल्प (A) पाठकों के भाषा-ज्ञान और शैक्षिक योग्यता का ध्यान रखने की आवश्यकता बताता है। यह मुद्रित माध्यम की पाठक-संबंधी सीमा है, उसकी स्वतंत्र विशेषता नहीं। प्रश्न में विशेषता के संबंध में असत्य कथन चुनना है।

चरण 2: अन्य कथनों की जाँच विकल्प (B) सही विशेषता है, क्योंकि पाठक पढ़ते समय रुककर चिंतन और विश्लेषण कर सकता है। (C) सही है, क्योंकि मुद्रित सामग्री लिखित भाषा का विस्तार है। (D) भी सही है, क्योंकि छपे हुए शब्द सुरक्षित रखे जा सकते हैं। इसलिए विशेषता की श्रेणी में न आने वाला कथन (A) है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है। यह कथन मुद्रित माध्यम की विशेषता के स्थान पर पाठक-संबंधी सीमा बताता है।

त्वरित सुझाव: विशेषता पूछे जाने पर स्थायित्व, विचार और लिखित भाषा को पाठक की योग्यता जैसी सीमाओं से अलग पहचानें।

3(ii). संपादन कहलाता है – [1 अंक]

(A) प्राप्त खबरों को समाचार-पत्र में प्रकाशित करने योग्य बनाना

(B) प्राप्त खबरों की सत्यता और रोचकता सिद्ध करना

(C) समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिए खबरों को ढूँढ़ना

(D) समाचार पत्रों में प्रकाशित करने के लिए खबरों को एकत्रित करना

सही उत्तर: (A) प्राप्त खबरों को समाचार-पत्र में प्रकाशित करने योग्य बनाना

हल:

अवधारणा:

- संपादन में प्राप्त समाचार को भाषा, तथ्य, क्रम और प्रस्तुति की दृष्टि से प्रकाशन के योग्य बनाया जाता है।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: संपादन की प्रक्रिया पहचानना खबर मिल जाने के बाद उसकी अशुद्धियाँ हटाना, आवश्यक तथ्य स्पष्ट करना और सामग्री को उचित आकार तथा क्रम में रखना संपादन का काम है। इस प्रक्रिया का परिणाम प्रकाशन-योग्य समाचार होता है। विकल्प (A) इसी व्यापक अर्थ को व्यक्त करता है।

चरण 2: शेष विकल्पों का परीक्षण विकल्प (B) में सत्यता और रोचकता तक बात सीमित है; संपादन का काम इससे व्यापक है। (C) खबर ढूँढ़ने और (D) खबर एकत्रित करने की क्रियाएँ समाचार-संकलन से संबंधित हैं। केवल समाचार प्राप्त करना उसे प्रकाशन-योग्य बनाने के समान नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A): प्राप्त खबरों को समाचार-पत्र में प्रकाशित करने योग्य बनाना।

त्वरित सुझाव: खबर खोजना और जुटाना संकलन है; प्राप्त खबर को सँवारकर प्रकाशन-योग्य बनाना संपादन है।

3(iii). नेट साउंड या नेट कहते हैं – [1 अंक]

(A) घटना स्थल से प्रत्यक्षदर्शियों की आवाज़ को

(B) शूट करते समय खुद-ब-खुद रिकार्ड होने वाली आवाज़ को

(C) खबरों को प्रभावशाली बनाने के लिए कृत्रिम आवाज़ को

(D) नेट के माध्यम से आने वाली आवाज़ को

सही उत्तर: (B) शूट करते समय खुद-ब-खुद रिकार्ड होने वाली आवाज़ को

हल:

अवधारणा:

- नेट साउंड का आशय घटनास्थल के वास्तविक परिवेश की स्वाभाविक ध्वनि से है।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: स्वाभाविक ध्वनि पहचानना कैमरे से दृश्य शूट करते समय आसपास की आवाजें भी अपने-आप रिकॉर्ड हो जाती हैं। यातायात का शोर, भीड़ की हलचल या अन्य वास्तविक परिवेश-ध्वनियाँ दृश्य को स्वाभाविक बनाती हैं। ऐसी ध्वनि को नेट साउंड या नेट कहते हैं। विकल्प (B) यही अर्थ देता है।

चरण 2: भ्रामक विकल्पों को अलग करना विकल्प (A) केवल प्रत्यक्षदर्शियों की आवाज तक सीमित है, जबकि नेट में पूरा प्राकृतिक परिवेश शामिल हो सकता है। (C) की कृत्रिम आवाज बाद में जोड़ा गया प्रभाव है। (D) में नेट को इंटरनेट समझ लिया गया है; यहाँ उसका अर्थ इंटरनेट के माध्यम से आने वाली ध्वनि नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B): शूट करते समय खुद-ब-खुद रिकॉर्ड होने वाली आवाज।

त्वरित सुझाव: नेट साउंड में घटनास्थल की वास्तविक आवाज पहचानें; इसे इंटरनेट या बाद में जोड़े ध्वनि-प्रभाव से न जोड़ें।

3(iv). तथ्यों या सूचनाओं को उनके घटते हुए महत्त्वपूर्ण क्रम में लिखना, कहलाता है – [1 अंक]

(A) उलटा पिरामिड शैली

(B) सीधा पिरामिड शैली

(C) कथात्मक शैली

(D) वर्णनात्मक शैली

सही उत्तर: (A) उलटा पिरामिड शैली

हल:

अवधारणा:

- उलटा पिरामिड शैली में समाचार का सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले और अपेक्षाकृत कम महत्त्वपूर्ण तथ्य बाद में आते हैं।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: तथ्यों के क्रम को समझना प्रश्न में सूचनाओं को घटते हुए महत्त्व के क्रम में रखने की बात कही गई है। इस क्रम में शुरुआत में मुख्य समाचार मिलता है और उसके बाद उसका विस्तार तथा अन्य विवरण दिए जाते हैं। इसलिए पाठक पहले ही भाग से मूल घटना जान लेता है।

चरण 2: शैलियों का अंतर करना विकल्प (A) इसी उलटे पिरामिड क्रम को बताता है। (B) का सीधा पिरामिड क्रम इसके विपरीत है। (C) की कथात्मक शैली में घटनाक्रम या कथा का विकास प्रमुख होता है। (D) की वर्णनात्मक शैली में विवरण प्रमुख है; उसमें घटता महत्त्व अनिवार्य नियम नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A): उलटा पिरामिड शैली।

त्वरित सुझाव: सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना पहले दिखे और विवरण का महत्त्व क्रमशः घटे तो उलटा पिरामिड शैली चुनें।

3(v). समाचार के मुखड़े में खबर लिखी जाने का सही ककार क्रम है – [1 अंक]

(A) क्या, कौन, कब, कहाँ

(B) क्या, कौन, कब, क्यों

(C) कौन, क्यों, क्या, कैसे

(D) क्या, कहाँ, कब, कैसे

सही उत्तर: (A) क्या, कौन, कब, कहाँ

हल:

अवधारणा:

- समाचार के मुख्य तथ्य क्या, कौन, कब और कहाँ से स्पष्ट होते हैं; क्यों और कैसे से कारण तथा प्रक्रिया का विस्तार मिलता है।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: मुखड़े के मूल प्रश्न पहचानना समाचार का मुखड़ा पाठक को घटना का मुख्य परिचय देता है। क्या हुआ, उससे कौन संबंधित है, घटना कब हुई और कहाँ हुई—इन बातों से बुनियादी समाचार स्पष्ट हो जाता है। दिए गए विकल्पों में इन मूल ककारों का सही क्रम केवल (A) में है।

चरण 2: अन्य क्रमों की जाँच विकल्प (B) में कहाँ के स्थान पर क्यों है। (C) में कारण को पहले रखकर मूल परिचय का क्रम बदल दिया गया है और समय तथा स्थान भी नहीं हैं। (D) में कौन के स्थान पर कैसे है। कारण और प्रक्रिया उपयोगी अवश्य हैं, पर यहाँ मुखड़े के अपेक्षित मूल क्रम का प्रश्न है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A): क्या, कौन, कब, कहाँ।

त्वरित सुझाव: मुखड़े में पहले घटना, संबंधित व्यक्ति, समय और स्थान पहचानें; कारण तथा प्रक्रिया विस्तार में खोजें।

4. झूमने लगे फल,
रस अलौकिक,
अमृत धाराएँ फूटती
रोपाई क्षण की
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना [5 अंक]

4(i). साहित्यिक कृति से जो अलौकिक अमृत-धारा फूटी, वह किसका परिणाम है ? [1 अंक]

(A) कवि की कल्पना का
(B) किसान की मेहनत का
(C) क्षण में होने वाली रोपाई का
(D) क्षण में होने वाली कटाई का

सही उत्तर: (A) कवि की कल्पना का

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में खेत काव्य-सृजन का रूपक है और फल तथा अमृत-धाराएँ साहित्य से मिलने वाले आनंद के संकेत हैं।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: रूपक का अर्थ समझना अंश में फलों के झूमने के साथ रस को अलौकिक और अमृत-धाराओं को फूटता हुआ कहा गया है। यहाँ वास्तविक कृषि का वर्णन मुख्य उद्देश्य नहीं है। कवि की कल्पना से रचित साहित्य पाठक को साधारण अनुभव से ऊपर उठाने वाला आनंद देता है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण इसलिए (A) का कवि की कल्पना वाला उत्तर उपयुक्त है। (B) किसान की वास्तविक मेहनत की ओर जाता है और रूपक का साहित्यिक अर्थ नहीं पकड़ता। (C) रोपाई के क्षण को ही पूरा कारण मानता है। (D) क्षण में कटाई कहता है, जबकि अंश में कटाई अनंतता की कही गई है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A): कवि की कल्पना का।

त्वरित सुझाव: खेत के रूपक में फसल को साहित्य और उसके रस को काव्यानंद से जोड़कर विकल्प चुनें।

4(ii). 'कटाई अनंतता की' के माध्यम से कवि साहित्य की किस विशेषता की ओर संकेत करना चाहता है ? [1 अंक]

(A) साहित्य कालजयी होता है।
(B) साहित्य समाज-सापेक्ष होता है।
(C) साहित्य समाज का दर्पण होता है।
(D) साहित्य अनंतता का भंडार होता है।

सही उत्तर: (A) साहित्य कालजयी होता है।

हल:

अवधारणा:

- कटाई अनंतता की कहने से साहित्य के दीर्घजीवी प्रभाव और बार-बार प्राप्त होने वाले रस की ओर संकेत होता है।

- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: अनंतता के आशय की पहचान काव्यांश में रोपाई का क्षण छोटा है, लेकिन कटाई अनंत है। रचना किसी विशेष समय में बनती है, फिर भी उससे मिलने वाला आनंद समय की सीमाओं से आगे बना रह सकता है। अगली पंक्तियों का न घटने वाला रस इसी निरंतरता को स्पष्ट करता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों से तुलना विकल्प (A) की कालजयिता इस आशय का सटीक नाम है। (B) समाज-सापेक्षता और (C) समाज का दर्पण होना साहित्य के अन्य पक्ष हैं, पर यहाँ समय से परे बने रहने की बात है। (D) का अनंतता का भंडार कहना अस्पष्ट है और साहित्य की इस विशेषता का स्पष्ट नाम नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A): साहित्य कालजयी होता है।

त्वरित सुझाव: अनंत कटाई में समय का संकेत पकड़ें; बार-बार और लंबे समय तक रस मिलने का अर्थ कालजयिता है।

4(iii). रचना कर्म की दृष्टि से साहित्य को 'रस का अक्षय पात्र' क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

(A) साहित्य जगत में कवि की पहचान अनंतकाल तक बनी रहने के कारण

(B) साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण

(C) साहित्य और समाज का घनिष्ठ संबंध होने के कारण

(D) साहित्य मनोरंजन का प्रमुख साधन होने के कारण

सही उत्तर: (B) साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण

हल:

अवधारणा:

- अक्षय का अर्थ है जो समाप्त या कम न हो; यहाँ पात्र साहित्य से मिलने वाले आनंद का प्रतीक है।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: काव्यांश से अर्थ निकालना कवि कहता है कि लुटते रहने से रस जरा भी कम नहीं होता। रचना अनेक पाठकों को आनंद देती है और बार-बार पढ़ने पर भी उसकी रसदायिनी शक्ति बनी रहती है। इसी निरंतर आनंद के कारण साहित्य को रस का अक्षय पात्र कहा गया है।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन विकल्प (B) साहित्य से प्राप्त आनंद की अनंतता को व्यक्त करता है। (A) कवि की पहचान की बात करता है, जबकि पंक्तियों का केंद्र रस है। (C) समाज से घनिष्ठ संबंध का कथन इस बिंब का कारण नहीं बताता। (D) मनोरंजन तक सीमित है और आनंद के न घटने की विशेषता छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B): साहित्य से प्राप्त आनंद के अनंतकाल तक बने रहने के कारण।

त्वरित सुझाव: अक्षय पात्र का अर्थ कवि की प्रसिद्धि से नहीं, बाँटने पर भी न घटने वाले साहित्यिक आनंद से निकालें।

4(iv). कवि कर्म की दृष्टि से 'रोपाई' का अर्थ है [1 अंक]

(A) काव्यानंद की अनुभूति

(B) फसल की कटाई करना

(C) बीजों की बुवाई करना

(D) अनुभूति को शब्द-बद्ध करना

सही उत्तर: (D) अनुभूति को शब्द-बद्ध करना

हल:

अवधारणा:

- कवि कर्म में खेती की क्रियाएँ रचना की अवस्थाओं का रूपक बनती हैं; रोपाई का संबंध अनुभव को अभिव्यक्ति देने से है।
- उत्तर निर्धारित करते समय प्रश्न के निर्णायक शब्द और सभी विकल्पों के अर्थ की तुलना आवश्यक है।

चरण 1: रोपाई को रचना से जोड़ना खेत में रोपाई से फसल का आरंभ होता है। इसी तरह साहित्य में अनुभव या अनुभूति को शब्दों में ढालने से रचना आकार ग्रहण करती है। इसीलिए कवि कर्म की दृष्टि से रोपाई का अर्थ अनुभूति को शब्द-बद्ध करना है। यह रचना बनने का क्षण है।

चरण 2: शेष अर्थों की जाँच विकल्प (D) साहित्यिक प्रक्रिया का सही अर्थ देता है। (A) काव्यानंद की अनुभूति रचना से मिलने वाले रस की स्थिति है। (B) फसल काटना और (C) बीज बोना वास्तविक कृषि की क्रियाएँ हैं। प्रश्न कवि कर्म की दृष्टि से अर्थ पूछता है, इसलिए केवल कृषि का शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाएगा।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D): अनुभूति को शब्द-बद्ध करना।

त्वरित सुझाव: प्रश्न में कवि कर्म लिखा हो तो रोपाई जैसी कृषि-क्रिया को रचना की प्रक्रिया में बदलकर अर्थ समझें।

4(v). छोटा खेत किसका प्रतीकार्थ है ? [1 अंक]

(A) फसल रोपे जाने वाले खेत का।

(B) आकार में छोटे खेत का।

(C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

(D) कागज के उस पन्ने का जो पुस्तक में जिल्द-बद्ध रहता है।

सही उत्तर: (C) कागज के उस पन्ने का जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

हल:

अवधारणा:

- काव्य में खेत और कागज के पन्ने की तुलना सृजन की प्रक्रिया स्पष्ट करती है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: कागज के पन्ने का संकेत कवि का छोटा चौकोना खेत वह कागज है जिस पर अनुभूति और कल्पना शब्दों का रूप लेकर कविता बनती हैं। फसल के स्थान पर यहाँ रचना का आनंद मिलता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) में वास्तविक कृषि-भूमि और (B) में केवल उसका आकार है; दोनों सृजन का प्रतीकार्थ नहीं बताते। (D) पुस्तक में जिल्द-बद्ध पन्ने की स्थिति बताता है, जबकि संकेत उस पन्ने का है जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है।

चरण 3: निष्कर्ष छोटा खेत उस कागज के पन्ने का प्रतीक है जिस पर रचना शब्द-बद्ध होती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: खेत को कागज और फसल को रचना से जोड़कर प्रतीक का अर्थ पहचानें।

5. पिता का उस पर अगाध प्रेम होने के कारण स्वभावतः ईर्ष्यालु और संपत्ति की रक्षा में सतर्क विमाता ने उनके मरणांतक रोग का समाचार तब भेजा, जब वह मृत्यु की सूचना भी बन चुका था। रोने-पीटने के अपशकुन से बचने के लिए सास ने भी उसे कुछ न बताया। बहुत दिन से नैहर नहीं गई, सो जाकर देख आवे, यही कहकर और पहना-उढ़ाकर सास ने उसे विदा कर दिया। इस अप्रत्याशित अनुग्रह ने उसके पैरों में जो पंख लगा दिए थे, वे गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ गए। 'हाय लछमिन अब आई' की अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियाँ उसे घर तक ठेल ले गई। पर वहाँ न पिता का चिह्न शेष था, न विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार का लेश था। दुख से शिथिल और अपमान से जलती हुई वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। सास को खरी-खोटी सुनाकर उसने विमाता पर आया हुआ क्रोध शांत किया और पति के ऊपर गहने फेंक-फेंककर उसने पिता के चिर विछोह की मर्मव्यथा व्यक्त की। [5 अंक]

5(i). पिता की मृत्यु का समाचार भक्तिन के पास विमाता द्वारा देरी से भेजने का कारण था – [1 अंक]

(A) उसे पसंद न करना

(B) उससे ईर्ष्या करना

(C) संपत्ति की रक्षा करना

(D) कोई साधन न होना

सही उत्तर: (C) संपत्ति की रक्षा करना

हल:

अवधारणा:

- कारण पहचानते समय चरित्र की प्रवृत्ति और उसके व्यावहारिक उद्देश्य में अंतर करना चाहिए।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: पाठ में स्पष्ट कारण गद्यांश विमाता को ईर्ष्यालु होने के साथ संपत्ति की रक्षा में सतर्क बताता है। पिता के मरणांतक रोग का समाचार देर से भेजने के पीछे संपत्ति पर अपना अधिकार सुरक्षित रखने की चिंता थी।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन (A) केवल नापसंदगी की सामान्य बात है। (B) ईर्ष्या विमाता की प्रवृत्ति अवश्य है, पर समाचार रोकने का विशिष्ट उद्देश्य (C) की संपत्ति-रक्षा है। (D) गलत है, क्योंकि सूचना भेजने का साधन न होने की कोई बात नहीं दी गई।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार देर से भेजने का कारण संपत्ति की रक्षा करना था। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: ईर्ष्यालु स्वभाव की पृष्ठभूमि से अलग समाचार रोकने का संपत्ति-संबंधी उद्देश्य देखें।

5(ii). भक्तिन ने सास के किस व्यवहार को 'अप्रत्याशित अनुग्रह' कहा है ? [1 अंक]

(A) बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना

(B) बढ़िया-बढ़िया वस्त्र पहनने के लिए देना

(C) बढ़िया-बढ़िया गहने पहनने के लिए देना

(D) पिता के घर जाने के लिए चना-चबेना देना

सही उत्तर: (A) बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में किसी अभिव्यक्ति का आशय उसके ठीक पहले वर्णित व्यवहार से स्पष्ट होता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: अनुग्रह का प्रसंग सास ने स्वयं कहा कि बहुत दिन से नैहर नहीं गई, इसलिए जाकर देख आए। पिता के घर जाने की अनुमति बिना माँगे मिलना भक्तिन के लिए अप्रत्याशित कृपा थी; उसे आने वाले दुख का पता नहीं था।

चरण 2: शेष विकल्पों से अंतर (B) और (C) वस्त्र तथा गहनों पर केंद्रित हैं। पहना-उढ़ाकर विदा करने का उल्लेख है, पर मुख्य अनुग्रह मायके जाने के लिए स्वयं कहना है। (D) में चना-चबेना देने का विवरण गद्यांश में नहीं मिलता।

चरण 3: निष्कर्ष बिना कहे ही पिता के घर जाने के लिए कहना अप्रत्याशित अनुग्रह था। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अनुग्रह का अर्थ तय करने के लिए सास के मायके जाने वाले कथन को पढ़ें।

5(iii). 'पैरों के पंखों का गाँव की सीमा में पहुँचते ही झड़ जाना' – का आशय है – [1 अंक]

(A) थकावट का दूर हो जाना
(B) खुशियों का समाप्त हो जाना
(C) खुशियों का दुख में बदल जाना
(D) पैरों की गति का मंद पड़ जाना

सही उत्तर: (C) खुशियों का दुख में बदल जाना

हल:

अवधारणा:

- पैरों में पंख लगना उल्लास और उत्सुकता का बिंब है; पंख झड़ना उस उत्साह के दुख में बदलने को व्यक्त करता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: दो स्थितियों की तुलना मायके जाने की अनुमति से भक्तिन प्रसन्न और उत्साहित थी। गाँव की सीमा पर लोगों की सहानुभूति और हाय लछमिन अब आई जैसी प्रतिक्रियाओं ने अनिष्ट का संकेत दिया। उसका उल्लास शोक में बदल गया।

चरण 2: विकल्पों का अंतर (A) थकावट दूर होने का अर्थ देता है, जो प्रसंग से असंबद्ध है। (B) खुशी समाप्त होने की बात तो कहता है, पर उसके दुख में बदलने को नहीं बताता। (D) केवल चाल की गति तक सीमित है। (C) भाव-परिवर्तन को सबसे पूरा व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस अभिव्यक्ति का आशय खुशियों का दुख में बदल जाना है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: मायके जाने के उत्साह और गाँव वालों की सहानुभूति के बीच भाव-परिवर्तन पहचानें।

5(iv). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : लक्ष्मी पिता के घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी।
कारण (R) : वह पिता के चिर-वियोग और विमाता के व्यवहार से दुखी थी। [1 अंक]

(A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन (A) गलत है लेकिन कारण (R) सही है।
(C) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों गलत हैं।
(D) कथन (A) सही है लेकिन कारण (R) उसकी गलत व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (A) कथन (A) तथा कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता अलग जाँचकर उनके बीच व्याख्यात्मक संबंध निर्धारित करना चाहिए।

- पिता का वियोग और विमाता का अपमानजनक व्यवहार भक्तिन की भावनात्मक प्रतिक्रिया समझाते हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता कथन (A) सही है। गद्यांश स्पष्ट कहता है कि वह उस घर में पानी भी बिना पिए उलटे पैरों ससुराल लौट पड़ी। यह तत्काल लौटने की घटना का सही विवरण है।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण (R) भी सही है। वहाँ पिता का चिह्न शेष नहीं था और विमाता के व्यवहार में शिष्टाचार भी नहीं था। इसलिए लक्ष्मी पिता-वियोग से दुखी तथा अपमान से आहत थी।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध और विकल्प इसी दुख और अपमान के कारण वह वहाँ ठहरना नहीं चाहती थी और तुरंत लौट पड़ी। अतः कारण कथन की सही व्याख्या करता है। (B) कथन को गलत तथा (C) दोनों को गलत बताते हैं, इसलिए गलत हैं। (D) सही व्याख्यात्मक संबंध को नकारता है।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पिता-वियोग और विमाता के अपमान को तत्काल लौटने के निर्णय से जोड़कर कारण जाँचें।

5(v). गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए –

(क) गाँव की सीमा में पहुँचते ही लक्ष्मी के पैरों में पंख लग गए।

(ख) लक्ष्मी को देखते ही गाँव वाले उसे सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखने लगे।

(ग) लक्ष्मी ने विमाता पर आया क्रोध पति को खरी-खोटी सुनाकर शांत किया।

उपरिलिखित कथनों में से कौन-सा/कौन-से सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल (क)

(B) केवल (ख)

(C) केवल (क) और (ग)

(D) केवल (ख) और (ग)

सही उत्तर: (B) केवल (ख)

हल:

अवधारणा:

- कथनों को गद्यांश के घटनाक्रम और संबंधित पात्र के साथ मिलाकर सत्यापित करना चाहिए।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: कथन (क) और (ख) की जाँच (क) गलत है। गाँव की सीमा में पहुँचकर लक्ष्मी के पैरों के पंख झड़ गए थे, लगे नहीं थे। (ख) सही है, क्योंकि गाँव वालों की सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों का स्पष्ट उल्लेख गद्यांश में है।

चरण 2: कथन (ग) और विकल्पों की जाँच (ग) गलत है। विमाता पर आया क्रोध लक्ष्मी ने सास को खरी-खोटी सुनाकर शांत किया था। पति के ऊपर उसने गहने फेंककर पिता-वियोग की पीड़ा व्यक्त की। इसलिए (A) और (C) में गलत कथन (क), तथा (D) में गलत कथन (ग) शामिल है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन (ख) सही है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: सास को खरी-खोटी सुनाने और पति पर गहने फेंकने की अलग घटनाएँ याद रखें।

6(i). आनंदा का पिता अपने बेटे से खेतों में काम क्यों करवाता था ? [1 अंक]

(A) अपने पुत्र को परिश्रमी बनाने के लिए।

(B) खेती-बाड़ी के काम में दक्ष बनाने के लिए।

(C) आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए।

(D) अपना जीवन मौज-मस्ती में व्यतीत करने के लिए।

सही उत्तर: (D) अपना जीवन मौज-मस्ती में व्यतीत करने के लिए।

हल:

अवधारणा:

- आनंदा की शिक्षा के प्रति पिता का विरोध उसके स्वार्थ और काम से बचने की प्रवृत्ति से जुड़ा है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: पिता के उद्देश्य की पहचान जूझ में पिता बेटे को खेती में लगाए रखकर स्वयं श्रम से बचना चाहता था। आनंदा के खेत सँभालने से पिता को आराम और मौज-मस्ती का अवसर मिलता था; पढ़ाई में उसकी रुचि पिता के लिए बाधा थी।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) परिश्रमी बनाना और (B) खेती में दक्ष बनाना आदर्श प्रशिक्षण के उद्देश्य हैं, पर पिता के स्वार्थपूर्ण व्यवहार को नहीं बताते। (C) आर्थिक स्वतंत्रता देना भी उसका उद्देश्य नहीं था; वह बेटे को अपने काम में बाँधे रखना चाहता था।

चरण 3: निष्कर्ष पिता अपना जीवन मौज-मस्ती में व्यतीत करने के लिए आनंदा से खेतों में काम करवाता था। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पिता के बताए बहानों के बजाय उसके आराम और बेटे के श्रम के संबंध पर ध्यान दें।

6(ii). यशोधर बाबू ने सरकारी घर में रहते हुए भी किस कारण से रहने के लिए घर नहीं बनवाया ? [1 अंक]

(A) तनख्वाह कम और खर्च ज्यादा होने के कारण

(B) तीन में से एक-न-एक लड़के का सरकारी नौकरी में आने के विश्वास के कारण

(C) मकान बनाने के झंझटों से बचने के कारण

(D) भविष्य के बारे में योजनाबद्ध तरीके से न चलने के कारण

सही उत्तर: (B) तीन में से एक-न-एक लड़के का सरकारी नौकरी में आने के विश्वास के कारण

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू की सोच में सरकारी नौकरी और उससे मिलने वाली सुविधाओं के प्रति विश्वास दिखाई देता है।
- सही विकल्प चुनने के लिए सभी विकल्पों को पाठ के संदर्भ और प्रश्न की माँग से मिलाना आवश्यक है।

चरण 1: घर न बनवाने की अपेक्षा यशोधर बाबू सरकारी आवास में रहते थे। उन्हें विश्वास था कि तीन पुत्रों में से कोई न कोई सरकारी नौकरी में आ जाएगा और सरकारी क्वार्टर मिल जाएगा। इसी आशा से उन्होंने अपना मकान बनवाने की जरूरत नहीं समझी।

चरण 2: शेष विकल्पों का परीक्षण (A) कम वेतन और अधिक खर्च को इस निर्णय का विशिष्ट कारण नहीं बताया गया है। (C) केवल निर्माण के झंझट और (D) सामान्य योजना-विहीनता की बात करते हैं। प्रश्न का सटीक प्रसंग पुत्र के सरकारी नौकरी में आने की उनकी उम्मीद है।

चरण 3: निष्कर्ष तीन में से किसी एक लड़के के सरकारी नौकरी में आने के विश्वास के कारण उन्होंने घर नहीं बनवाया। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मकान के प्रश्न को यशोधर बाबू की सरकारी नौकरी और सरकारी आवास वाली अपेक्षा से जोड़ें।

6(iii). 'अजायबघर में प्रदर्शित चीजों में औज़ार तो हैं, पर हथियार कोई नहीं है।' इस पंक्ति के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि – [1 अंक]

(A) सिंधु घाटी सभ्यता स्वयं अनुशासित सभ्यता थी।
(B) सिंधु घाटी सभ्यता राजा द्वारा अनुशासित सभ्यता थी।
(C) सिंधु घाटी सभ्यता लो-प्रोफाइल सभ्यता थी।
(D) सिंधु घाटी सभ्यता धर्म पोषित सभ्यता थी।

सही उत्तर: (A) सिंधु घाटी सभ्यता स्वयं अनुशासित सभ्यता थी।

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता में औज़ारों और हथियारों का अंतर।
- औज़ार उत्पादन, निर्माण और सामान्य जीवन की आवश्यकताओं से जुड़े होते हैं। हथियार युद्ध, हिंसा और दूसरों पर बलपूर्वक नियंत्रण के साधन होते हैं।

चरण 1: पंक्ति का आशय समझें अजायबघर में औज़ारों का मिलना वहाँ के श्रम और उपयोगी कामों का संकेत है। इसके साथ हथियारों का न मिलना लेखक को यह विचार देता है कि समाज का अनुशासन सैनिक शक्ति अथवा भय पर आधारित नहीं था। लोग सामाजिक व्यवस्था का पालन स्वयं करते थे।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण करें इसलिए (A) में दिया स्वयं अनुशासित होने का विचार उपयुक्त है। (B) राजा के नियंत्रण और (D) धर्म के संरक्षण की बात करते हैं, जिनका प्रमाण इस पंक्ति में नहीं है। (C) का लो-प्रोफाइल होना पाठ का व्यापक विचार है, पर हथियारों की अनुपस्थिति का यहाँ सीधा आशय आत्मानुशासन है।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता स्वयं अनुशासित सभ्यता थी। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: औज़ार और हथियार का भेद देखकर श्रम तथा बलपूर्वक शासन के बीच अंतर पहचानें।

6(iv). यशोधर बाबू के मातहत उन्हें क्यों पसंद नहीं करते थे ? [1 अंक]

(A) वे अपना काम अपने मातहतों से करवाते थे।
(B) उनके कारण उन्हें दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था।
(C) वे जूनियरों के साथ कठोर व्यवहार करते थे।
(D) मातहतों का हँसी-मजाक उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था।

सही उत्तर: (B) उनके कारण उन्हें दफ्तर में देर तक बैठना पड़ता था।

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू की दफ़्तरी आदत और मातहतों की प्रतिक्रिया।
- पात्र के प्रति दूसरे पात्रों की प्रतिक्रिया समझने के लिए उसकी दैनिक आदत और उस आदत के परिणाम को साथ पढ़ना चाहिए।

चरण 1: दफ़्तर की स्थिति पहचानें यशोधर बाबू दफ़्तर से समय पर निकलने के बजाय देर तक बैठे रहते थे। उनके बैठे रहने का असर मातहत कर्मचारियों पर भी पड़ता था। वे अपना काम या निर्धारित समय समाप्त होने पर भी तुरंत घर नहीं जा पाते थे और उन्हें दफ़्तर में अधिक देर तक रुकना पड़ता था।

चरण 2: अन्य विकल्पों से अंतर करें इसी असुविधा के कारण मातहत उन्हें पसंद नहीं करते थे। (A) में अपना काम दूसरों से कराने का आरोप और (C) में कठोर व्यवहार का कारण दिया है; ये इस प्रश्न के प्रसंग के कारण नहीं हैं। (D) भी उचित नहीं है, क्योंकि प्रसंग का केंद्र हँसी-मज़ाक का निषेध नहीं, देर तक बैठने की बाध्यता है।

चरण 3: निष्कर्ष उनके कारण मातहतों को दफ़्तर में देर तक बैठना पड़ता था। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: मातहतों की नाराज़गी का कारण खोजते समय यशोधर बाबू की देर तक बैठने की आदत याद रखें।

6(ix). मुअनजो-दड़ो की गलियों में टहलते हुए लेखक को किस जगह की याद आई ? [1 अंक]

(A) राजस्थान के गाँव कुलधरा की
(B) हरियाणा के गाँव कुलधरा की
(C) गुजरात के गाँव कुलधरा की
(D) पंजाब के गाँव कुलधरा की

सही उत्तर: (A) राजस्थान के गाँव कुलधरा की

हल:

अवधारणा:

- यात्रा-वर्णन में स्थानों की स्मृति।
- यात्रा-वर्णन में लेखक किसी नए स्थान को देखकर अपने पहले देखे हुए स्थान से उसका साम्य अनुभव कर सकता है। ऐसे प्रश्न में स्थान का सही भौगोलिक परिचय भी आवश्यक है।

चरण 1: लेखक की स्मृति पहचानें मुअनजो-दड़ो की गलियों में चलते हुए लेखक को राजस्थान के उजड़े हुए गाँव कुलधरा की याद आती है। प्राचीन बस्ती की गलियाँ और उसका सूना परिवेश इस स्मृति को जगाते हैं। प्रश्न उसी स्पष्ट स्थान-संबंध की पहचान कराता है।

चरण 2: राज्य के आधार पर विकल्प जाँचें चारों विकल्पों में गाँव का नाम कुलधरा ही है; बदलने वाला तथ्य उसका राज्य है। कुलधरा राजस्थान में है, इसलिए (A) उपयुक्त है। (B) हरियाणा, (C) गुजरात और (D) पंजाब बताकर उस स्थान को गलत राज्य से जोड़ते हैं; वे पाठ में व्यक्त स्मृति के अनुरूप नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को राजस्थान के गाँव कुलधरा की याद आई। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: जब सभी विकल्पों में गाँव एक हो, तब प्रश्न में बदलते हुए राज्य के नाम पर ध्यान दें।

6(v). दफ़्तर से बाहर निकलते समय यशोधर बाबू किशन दा द्वारा सिखाई गई कौन-सी परंपरा का पालन अवश्य करते ? [1 अंक]

(A) जूनियरों के साथ चाय-कॉफी पीना
(B) जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना
(C) अपनी टेबल का सारा काम खत्म करना
(D) जूनियरों के दिन-भर के काम का लेखा-जोखा लेना

सही उत्तर: (B) जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करना

हल:

अवधारणा:

- किशन दा से मिली दफ़्तरी परंपरा।
- किसी आदर्श व्यक्ति का प्रभाव उसके अनुयायी की छोटी दैनिक आदतों में भी दिखाई देता है। यहाँ संबंध किशन दा और यशोधर बाबू के व्यवहार का है।

चरण 1: परंपरा का स्वरूप समझें किशन दा से सीखी हुई परंपरा के अनुसार यशोधर बाबू दफ़्तर से बाहर निकलने के समय अपने जूनियरों के साथ मनोरंजक बातचीत अवश्य करते थे। यह वरिष्ठ और कनिष्ठ के बीच सहज संपर्क का अवसर था। प्रश्न इसी विशेष व्यवहार

को पूछता है।

चरण 2: विकल्पों में सही गतिविधि चुनें मनोरंजक बात करना (B) में ठीक दिया है। (A) चाय-कॉफी पीने की गतिविधि जोड़ता है, जो पूछी गई परंपरा नहीं है। (C) अपनी मेज़ का काम समाप्त करना और (D) जूनियरों के काम का लेखा-जोखा लेना दफ़्तरी कार्य से जुड़े हैं; वे इस अनौपचारिक बातचीत की परंपरा का वर्णन नहीं करते।

चरण 3: निष्कर्ष वे जूनियरों के साथ मनोरंजक बात करने की परंपरा निभाते थे। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: किशन दा की परंपरा को जूनियरों के साथ अनौपचारिक, मनोरंजक बातचीत से जोड़कर याद करें।

6(vi). दीवाली बीतते ही गाँव में कैसी चहल-पहल शुरू हो जाती थी ? [1 अंक]

(A) खेतों में फसलों की बुवाई शुरू होने लगती थी।

(B) खेतों में फसलों की कटाई शुरू होने लगती थी।

(C) ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे।

(D) फसलों को बेचने का काम शुरू होने लगता था।

सही उत्तर: (C) ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे।

हल:

अवधारणा:

- ग्रामीण जीवन का कृषि-आधारित कार्यचक्र।
- गाँव की मौसमी चहल-पहल का संबंध खेतों की उपज और उसके प्रसंस्करण से होता है। पाठ में बताए गए त्योहार और उसके बाद की गतिविधि को साथ पहचानना चाहिए।

चरण 1: दीवाली के बाद की गतिविधि पहचानें जूझ के ग्रामीण परिवेश में दीवाली बीतते ही ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे। इससे गाँव में कामकाज की चहल-पहल बढ़ जाती थी। यह उल्लेख ईख के रस निकालने की गतिविधि से जुड़ा है, केवल खेत में फसल खड़ी होने या बोने से नहीं।

चरण 2: विकल्पों का मिलान करें (C) सीधे ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने की बात कहता है, इसलिए वही सही है। (A) बुवाई और (B) कटाई के सामान्य कृषि कार्य बताते हैं, पर इस प्रसंग में उल्लिखित चहल-पहल का नाम नहीं बताते। (D) फसल बेचने की प्रक्रिया है; पाठ में दीवाली के तुरंत बाद वर्णित गतिविधि उससे भिन्न है।

चरण 3: निष्कर्ष दीवाली के बाद ईख पेरने के लिए कोल्हू चलने लगते थे। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: दीवाली के बाद की चहल-पहल के साथ ईख, रस और कोल्हू का क्रम जोड़कर याद करें।

6(vii). आनंदा को स्कूल में फिर से नाम लिखवाने की जरूरत क्यों नहीं पड़ी ? [1 अंक]

(A) क्योंकि दत्ताजी राव ने उसे स्कूल पढ़ने के लिए भेजा था।

(B) क्योंकि उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था।

(C) क्योंकि वह गाँव के प्रतिष्ठित परिवार से था।

(D) क्योंकि उसके पिता के मास्टर जी से घनिष्ठ संबंध थे।

सही उत्तर: (B) क्योंकि उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था।

हल:

अवधारणा:

- विद्यालय में पुनः प्रवेश का प्रसंग।
- किसी कार्य की औपचारिक आवश्यकता उसके पहले से दर्ज होने अथवा समाप्त हो जाने पर निर्भर करती है। यहाँ प्रश्न विद्यालय के रजिस्टर में आनंदा के नाम की स्थिति का है।

चरण 1: नाम लिखवाने की स्थिति स्पष्ट करें आनंदा ने पढ़ाई छोड़ दी थी, लेकिन विद्यालय के रजिस्टर से उसका नाम काटा नहीं गया था। वह पहले से दर्ज छात्र बना हुआ था। इसलिए लौटने पर उसे नए विद्यार्थी की तरह फिर से अपना नाम लिखवाने की आवश्यकता नहीं पड़ी।

चरण 2: कारण और सहायक प्रसंग अलग करें (B) यही प्रत्यक्ष कारण बताता है। (A) में दत्ताजी राव का सहयोग उसकी पढ़ाई फिर शुरू कराने से जुड़ सकता है, पर रजिस्टर में दोबारा नाम न लिखवाने का कारण नहीं है। (C) प्रतिष्ठित परिवार और (D) पिता-मास्टर जी के घनिष्ठ संबंध की बातें इस प्रसंग का आधार नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष उसका नाम रजिस्टर से कटा नहीं था, इसलिए दोबारा नाम लिखवाना नहीं पड़ा। अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पढ़ाई छूटना और रजिस्टर से नाम कटना अलग बातें हैं; प्रश्न में रजिस्टर की स्थिति देखें।

6(viii). आनंदा ने पाठशाला नहीं जाने की बात क्यों सोची ? [1 अंक]

(A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने के कारण

(B) मास्टर जी के कठोर व्यवहार के कारण

(C) स्कूल की वर्दी न होने के कारण

(D) कॉपी-किताब न होने के कारण

सही उत्तर: (A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाये जाने के कारण

हल:

अवधारणा:

- आनंदा की झिझक और सहपाठियों का व्यवहार।
- विद्यालय लौटने वाले बालक की मनःस्थिति समझते समय सहपाठियों के व्यवहार और उसके आत्मसम्मान पर पड़े प्रभाव को देखना चाहिए।

चरण 1: आनंदा की परेशानी पहचानें विद्यालय में लड़कों ने आनंदा की खिल्ली उड़ाई। इस उपहास से उसे संकोच और अपमान का अनुभव हुआ। इसी मानसिक चोट के कारण उसने पाठशाला न जाने की बात सोची। प्रश्न पढ़ाई की योग्यता के बजाय उस समय की भावनात्मक प्रतिक्रिया पर केंद्रित है।

चरण 2: अन्य कारणों की जाँच करें (A) लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाए जाने को कारण बताता है और प्रसंग से मेल खाता है। (B) मास्टर जी की कठोरता को कारण बनाता है, जबकि यहाँ सहपाठियों का उपहास निर्णायक है। (C) वर्दी तथा (D) कॉपी-किताब की कमी भौतिक कठिनाइयाँ हैं; वे पूछे गए निर्णय का प्रत्यक्ष कारण नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष लड़कों द्वारा खिल्ली उड़ाए जाने के कारण आनंदा ने पाठशाला न जाने की बात सोची। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: आनंदा के इस निर्णय को सहपाठियों के उपहास से जोड़ें, सामान की कमी से नहीं।

6(x). निम्नलिखित कथन, कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए –

कथन (A) : सिंधु घाटी सभ्यता लघुता में भी महत्ता का अनुभव कराने वाली संस्कृति थी।

कारण (R) : (क) लो-प्रोफाइल सभ्यता थी।

(ख) यहाँ के मूर्तिशिल्प, औजार छोटे हैं।

(ग) यहाँ मिले नरेश के सिर से छोटे सिरपेंच की कल्पना भी नहीं की जा सकती। [1 अंक]

(A) कथन (A) सही है, पर सभी कारण (R) ठीक नहीं हैं।

(B) कथन (A) सही है और (ख) और (ग) कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

(C) कथन (A) गलत है पर सभी कारण (R) ठीक हैं।

(D) कथन (A) सही है और तीनों कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

सही उत्तर: (D) कथन (A) सही है और तीनों कारण (R) उसकी सही व्याख्या करते हैं।

हल:

अवधारणा:

- संस्कृति की महत्ता केवल विशाल निर्माण या राजसी प्रदर्शन से नहीं आँकी जाती।
- छोटी कलाकृतियों में परिष्कार और संयम भी विकसित कला-बोध के प्रमाण होते हैं।

चरण 1: कथन की सत्यता जाँचें सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषता लघुता में महत्ता का अनुभव कराना है। उसका कला-बोध विशाल आकार या शक्ति के भव्य प्रदर्शन पर निर्भर नहीं है। इसलिए कथन (A) सही है।

चरण 2: तीनों कारणों का मूल्यांकन करें (क) उसका लो-प्रोफाइल होना संयमित, अनावश्यक प्रदर्शन से दूर संस्कृति का संकेत है। (ख) छोटे मूर्तिशिल्प और औज़ार छोटे आकार में उपयोगिता तथा कलात्मकता दिखाते हैं। (ग) नरेश के अत्यंत छोटे सिरपेंच का उदाहरण भी राजसी आडंबर के स्थान पर लघु और सधे हुए रूप को सामने रखता है। तीनों कारण पाठ के आशय के अनुकूल हैं।

चरण 3: कथन और कारण का संबंध समझें ये तीनों उदाहरण उसी विचार को पुष्ट करते हैं कि इस सभ्यता की महत्ता उसके विराट प्रदर्शन में नहीं, छोटे रूपों की गुणवत्ता में थी। इसलिए केवल (ख) और (ग) को स्वीकार करने वाला (B) अधूरा है। (A) कारणों को गलत ठहराता है और (C) कथन को गलत कहता है; दोनों अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष दिया गया कथन सही है और तीनों कारण उसकी सही व्याख्या करते हैं। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: लघुता में महत्ता के साथ लो-प्रोफाइल स्वरूप और छोटे कलात्मक उदाहरण तीनों जोड़कर देखें।

7(क). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
सर्दी की एक कँपकँपाती रात [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में कल्पना, निजी अनुभव और संवेदनशील भाषा के सहारे विषय को सजीव रूप दिया जाता है। प्रस्तुत विषय का केंद्र ठंड का अनुभव, जरूरतमंद की सहायता और मानवीय संवेदना है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में एक मुख्य प्रसंग रखें। संक्षिप्त आरंभ, क्रमबद्ध घटनाक्रम और प्रभावपूर्ण अंत आवश्यक हैं; अनावश्यक विस्तार से मूल अनुभूति कमजोर होती है।

चरण 1: रूप और भाषा का चयन शीर्षक विषय के अनुरूप रखिए। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र का पता, संबोधन या समापन नहीं आएगा। प्रथम पुरुष शैली से अनुभव आत्मीय बनता है। सहज शब्दों, छोटे वाक्यों और स्वाभाविक भावों से प्रसंग विश्वसनीय रखिए।

चरण 2: रात का वातावरण और अचानक मिला अनुभव कोहरे, सन्नाटे और ठंडी हवा के माध्यम से रात का वातावरण बनाइए। फिर किसी जरूरतमंद से भेंट जैसी छोटी घटना जोड़िए। सहायता से उत्पन्न आत्मीयता को अंत का आधार बनाइए। वर्णन में दृश्य और स्पर्श संबंधी अनुभूतियाँ उपयोगी होंगी।

चरण 3: पूरा नमूना लेख **सर्दी की एक कँपकँपाती रात**

दिसंबर की वह रात आज भी याद है। घना कोहरा गलियों को निगल रहा था। ठंडी हवा सुइयों की तरह चुभ रही थी। सड़कें सुनसान थीं और कुत्ते भी दुबक गए थे। मैं खिड़की बंद करने उठा तो सामने फुटपाथ पर एक बूढ़े व्यक्ति को काँपते देखा। उनका फटा कंबल ठंड रोक नहीं पा रहा था। मैंने माँ को बताया। हम गर्म चाय और एक कंबल लेकर उनके पास पहुँचे। उन्होंने काँपते हाथों से प्याला थामा और हमें आशीर्वाद दिया। लौटते समय हवा उतनी ही ठंडी थी, लेकिन मेरे भीतर अजीब गरमाहट थी। उस रात समझ आया कि सर्दी केवल मौसम की नहीं होती; उपेक्षा भी मनुष्य को ठिठुरा देती है। थोड़ी संवेदना किसी की रात बदल सकती है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत नमूना लेख में विषयानुकूल शीर्षक, लगभग 120 शब्दों का सुसंगत घटनाक्रम और अनुभव से उपजा सार्थक अंत है। इसे लिखते समय संवेदना तथा स्वाभाविक अभिव्यक्ति बनाए रखनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले तीन संकेत तय करें: आरंभ का दृश्य, बीच की मुख्य घटना और अंत की अनुभूति। इन्हीं के सहारे लगभग 120 शब्दों में लेख पूरा करें।

7(ख). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
जब पिताजी की पदोन्नति हुई [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में कल्पना, निजी अनुभव और संवेदनशील भाषा के सहारे विषय को सजीव रूप दिया जाता है। प्रस्तुत विषय का केंद्र पारिवारिक प्रसन्नता, परिश्रम की सफलता और बढ़ती जिम्मेदारी है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में एक मुख्य प्रसंग रखें। संक्षिप्त आरंभ, क्रमबद्ध घटनाक्रम और प्रभावपूर्ण अंत आवश्यक हैं; अनावश्यक विस्तार से मूल अनुभूति कमजोर होती है।

चरण 1: रूप और भाषा का चयन शीर्षक विषय के अनुरूप रखिए। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए पत्र का पता, संबोधन या समापन नहीं आएगा। प्रथम पुरुष शैली से अनुभव आत्मीय बनता है। सहज शब्दों, छोटे वाक्यों और स्वाभाविक भावों से प्रसंग विश्वसनीय रखिए।

चरण 2: समाचार से उत्सव और सीख तक का क्रम पिताजी की पदोन्नति की सूचना से प्रसंग आरंभ कीजिए। परिवार की सहज प्रतिक्रिया, उनकी मेहनत की स्मृति और साथ मिलकर मनाई गई खुशी का चित्र दीजिए। अंत में पदोन्नति से जुड़ी जिम्मेदारी और जीवन की सीख को स्पष्ट कीजिए।

चरण 3: पूरा नमूना लेख **जब पिताजी की पदोन्नति हुई**

उस शाम पिताजी के चेहरे पर अलग ही चमक थी। घर में प्रवेश करते ही उन्होंने बताया कि उनकी पदोन्नति हो गई है। माँ के हाथ से चाय की चम्मच छूटते बची और मैं खुशी से उछल पड़ा। बरसों की मेहनत को आखिर पहचान मिली थी। मुझे वे रातें याद आईं, जब पिताजी देर तक कार्यालय की फाइलें देखते रहते थे। माँ ने तुरंत हलवा बनाया। हमने दादी का आशीर्वाद लिया और साथ बैठकर मिठाई खाई। मैंने नई साइकिल की माँग की तो पिताजी मुसकराए। फिर बोले कि बड़ा पद अधिक जिम्मेदारी भी लाता है। उनकी बात सुनकर मेरी खुशी में गर्व भी जुड़ गया। उस दिन सीखा कि सच्ची सफलता केवल सुविधा बढ़ना नहीं, ईमानदारी से अपने दायित्व निभाना है।

चरण 4: निष्कर्ष प्रस्तुत नमूना लेख में विषयानुकूल शीर्षक, लगभग 120 शब्दों का सुसंगत घटनाक्रम और अनुभव से उपजा सार्थक अंत है। इसे लिखते समय संवेदना तथा स्वाभाविक अभिव्यक्ति बनाए रखनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: पहले तीन संकेत तय करें: आरंभ का दृश्य, बीच की मुख्य घटना और अंत की अनुभूति। इन्हीं के सहारे लगभग 120 शब्दों में लेख पूरा करें।

7(ग). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
दिनोंदिन गिरता भू-जल स्तर [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, समस्या का प्रभाव और लेखक की संवेदना सुसंगत ढंग से प्रस्तुत होते हैं। भू-जल पर लिखते समय किसी ठोस दृश्य से शुरुआत करके जलसंकट और उसके समाधान तक पहुँचना प्रभावी रहता है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में संक्षिप्त शीर्षक, विचारों का क्रम और सार्थक समापन रखें। अनावश्यक आँकड़ों के बजाय परिचित जीवन के उदाहरण विषय को विश्वसनीय बनाते हैं।

चरण 1: प्रारूप और विचारों की रूपरेखा बनाएँ शीर्षक के बाद छोटे अनुच्छेदों में लेख लिखें। पहले सूखते कुएँ का दृश्य रखें; फिर अत्यधिक दोहन, पक्के होते धरातल और घटते प्राकृतिक पुनर्भरण को कारण बनाएँ। अंत में वर्षाजल-संचयन तथा पानी के संयमित उपयोग का आग्रह करें। भाषा में चिंता हो, किंतु समाधान की आशा भी रहे। सूखे कुएँ और गहरी होती पाइपों के बिंब स्थिति को प्रत्यक्ष बनाते हैं। अंतिम वाक्य पाठक को अपने व्यवहार में बदलाव लाने की प्रेरणा देता है; इसलिए लेख का समापन केवल भय पर न करें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **धरती की सूखती गागर**

गाँव का पुराना कुआँ अब बच्चों को कहानी लगता है। कभी उसकी जगत पर रस्सियों की आवाज गूँजती थी; आज नीचे झाँको तो केवल अँधेरा दिखाई देता है। शहरों में भी नलकूपों की पाइपें लगातार गहरी होती जा रही हैं। हम धरती से पानी निकालते रहे, पर उसे लौटाना भूल गए। पक्की सड़कों और आँगनों ने वर्षा की बूँदों का रास्ता रोक दिया है।

गिरता भू-जल स्तर केवल किसानों की चिंता नहीं, हमारी थाली और आने वाली पीढ़ियों का प्रश्न है। छतों का वर्षाजल जमीन तक पहुँचाना, तालाब बचाना और पानी का अपव्यय रोकना जरूरी है। यदि हर घर थोड़ी जिम्मेदारी निभाए, तो धरती की सूखी गागर फिर भर सकती है। शुरुआत आज अपने घर से ही करनी होगी।

चरण 3: निष्कर्ष लेख सूखते कुएँ के दृश्य से भू-जल संकट का अनुभव कराता है और वर्षाजल-संचयन, तालाबों के संरक्षण तथा व्यक्तिगत जिम्मेदारी का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: शुरुआत सूखते कुएँ जैसे एक दृश्य से करें और अंत में पानी बचाने का कोई ठोस व्यक्तिगत उपाय जोड़ें।

7(घ). निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए –
स्वप्न में प्रिय अभिनेता/अभिनेत्री से भेंट [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- स्वप्न पर आधारित रचनात्मक लेख में कल्पना को एक सुसंगत घटना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। दृश्य, संवाद और मनोभाव पाठक को अनुभव से जोड़ते हैं। स्वप्न का आरंभ और जागने का क्षण कथा को पूर्णता देते हैं।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में प्रिय अभिनेता से मिलने का उत्साह और उस भेंट का प्रभाव सामने आना चाहिए। इसे काल्पनिक अनुभव के रूप में लिखें; वास्तविक साक्षात्कार या प्रमाणित कथन के रूप में प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 1: प्रारूप और घटनाक्रम चुनें छोटा, आकर्षक शीर्षक रखें और प्रथम पुरुष में अपना अनुभव लिखें। क्रम होगा: स्वप्न में फिल्म के सेट पर पहुँचना, अभिनेता को पहचानना, संक्षिप्त संवाद और अलार्म से जागना। संवाद को छोटा रखें ताकि भावों और दृश्य के लिए पर्याप्त स्थान बचे। अंत में भेंट से मिली सीख जोड़ें। सपने में अभिनेता का सरल व्यवहार और कथावाचक का संकोच घटना को जीवंत बनाएँगे। दृश्य से संवाद और फिर जागने तक सहज संक्रमण रखें; असंबद्ध घटनाओं की भीड़ से बचें।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **एक यादगार स्वप्न**

कल रात मैं सपने में एक फिल्म के सेट पर पहुँच गया। चारों ओर कैमरे और रोशनी थी। तभी सामने मेरे प्रिय अभिनेता आमिर खान दिखाई दिए। मैं खुशी से कुछ बोल ही नहीं पाया। उन्होंने मुसकराकर पूछा, “इतने चुप क्यों हो?” मैंने हिम्मत जुटाकर कहा, “आपकी तरह अच्छा काम करना चाहता हूँ।”

वे मुझे पास की कुर्सी पर बैठाकर बोले, “पहले अपने काम से प्रेम करो और असफलता से सीखो।” हमने अभिनय, पढ़ाई और पुस्तकों पर बातें कीं। उनका सरल व्यवहार देखकर मेरा संकोच मिट गया। मैं उनके साथ तस्वीर खिंचवाने ही वाला था कि अलार्म बज उठा। आँख खुली तो मैं अपने कमरे में था। तस्वीर तो नहीं मिली, पर परिश्रम करने की प्रेरणा मन में रह गई।

चरण 3: निष्कर्ष स्वप्न की यह काल्पनिक भेंट उत्साह, सहज संवाद और अचानक जागने के प्रसंग से पूरी होती है तथा परिश्रम की प्रेरणा छोड़ती है।

त्वरित सुझाव: अभिनेता से भेंट के लेख में एक छोटा संवाद और जागने का क्षण अवश्य रखें, ताकि स्वप्न का अनुभव स्पष्ट रहे।

8(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –
कहानी और नाटक में पाई जाने वाली समानताओं और असमानताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी और नाटक दोनों साहित्य की कथात्मक विधाएँ हैं; इनमें कथानक, पात्र, संघर्ष और घटनाओं का विकास महत्त्वपूर्ण होता है।
- कहानी मुख्यत: पढ़ी जाती है, जबकि नाटक मंच पर अभिनय के माध्यम से दर्शकों के सामने प्रस्तुत होता है।

चरण 1: समानता के आधार पहचानना दोनों विधाओं में किसी घटना अथवा जीवनानुभव को पात्रों और परिस्थितियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। संवाद, चरित्र-चित्रण और घटनाओं की क्रमबद्धता कथ्य को आगे बढ़ाते हैं। इसलिए तुलना में केवल दोनों की कहानी होने की बात पर्याप्त नहीं; कथानक और पात्रों की साझा भूमिका भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 2: प्रस्तुति के अंतर समझना कहानीकार वर्णन, टिप्पणी और पात्रों के मनोभावों के विस्तृत विवरण का सहारा ले सकता है। नाटककार को वही बातें अभिनय, संवाद, मंच-संकेत और क्रियाओं से प्रकट करनी पड़ती हैं। मंच पर समय, स्थान और दृश्य-सज्जा की व्यावहारिक सीमाएँ भी रहती हैं। नाटक की भाषा इसीलिए बोलने और सुनने के अनुकूल होती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कहानी और नाटक में कथानक, पात्र, संवाद, संघर्ष तथा घटनाक्रम की समानता होती है। दोनों जीवन की स्थितियों और मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करते हैं। कहानी पढ़ी जाती है और उसमें वर्णन तथा मनोविश्लेषण की स्वतंत्रता रहती है। नाटक दृश्य-श्रव्य विधा है; उसका कथ्य संवाद, अभिनय और मंचीय क्रियाओं से खुलता है। उसमें समय, स्थान तथा मंच की

सीमाएँ महत्त्वपूर्ण हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथानक और पात्र दोनों विधाओं को जोड़ते हैं; वर्णन तथा मंचीय प्रस्तुति का अंतर उन्हें अलग पहचान देता है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय पहले कथानक-पात्र की समानता लिखें, फिर वर्णन और अभिनय के आधार पर अंतर स्पष्ट करें।

8(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

"रेडियो नाटक का लेखन सिनेमा और रंगमंच के लेखन से थोड़ा भिन्न भी है और थोड़ा मुश्किल भी" – कैसे ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो नाटक श्रव्य माध्यम है; श्रोता तक दृश्य के बजाय संवाद, ध्वनि-प्रभाव, संगीत और मौन पहुँचते हैं।
- रेडियो-लेखन में दृश्य सूचना को सहज श्रव्य संकेतों से स्पष्ट करना आवश्यक है, बिना संवाद को बोझिल बनाए।

चरण 1: माध्यमों के साधनों का अंतर सिनेमा में कैमरा, दृश्य, संपादन और पात्रों की भावभंगिमाएँ कथ्य को व्यक्त कर सकती हैं। रंगमंच पर अभिनेता की देहभाषा, वेशभूषा और मंच-सज्जा दिखाई देती है। रेडियो पर ये दृश्य साधन उपलब्ध नहीं होते। अतः जो सूचना दृश्य से अपने-आप समझ आती, उसे श्रव्य रूप में व्यक्त करने की रचनात्मक व्यवस्था करनी होती है।

चरण 2: लेखन की कठिनाई का कारण लेखक को पात्र की पहचान, स्थान-परिवर्तन, वातावरण और घटनाओं को संवाद तथा उपयुक्त ध्वनियों से बोधगम्य बनाना पड़ता है। उदाहरणतः आने वाले व्यक्ति की आहट या दरवाजे की ध्वनि दृश्य का संकेत दे सकती है। फिर भी हर क्रिया को पात्र के मुँह से बताने पर संवाद अस्वाभाविक हो जाएगा; इसलिए स्पष्टता और स्वाभाविकता का संतुलन कठिन है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर रेडियो नाटक केवल सुनाई देता है, जबकि सिनेमा और रंगमंच में दृश्य भी उपलब्ध होते हैं। इसलिए रेडियो लेखक को पात्र, परिवेश, घटनाएँ और भाव केवल संवाद, ध्वनि-प्रभाव, संगीत तथा मौन से स्पष्ट करने पड़ते हैं। दृश्य-सज्जा और भावभंगिमाओं के अभाव में श्रोता की कल्पना जगाना तथा संवादों को स्वाभाविक बनाए रखना कठिन है। इसीलिए उसका लेखन भिन्न और चुनौतीपूर्ण है।

चरण 4: निष्कर्ष दृश्य साधनों का अभाव रेडियो नाटक के लेखन को अलग बनाता है; सारी आवश्यक सूचना को स्वाभाविक श्रव्य रूप देना उसकी मुख्य चुनौती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दृश्य के अभाव के साथ संवाद, ध्वनि-प्रभाव और श्रोता की कल्पना की भूमिका अवश्य जोड़ें।

8(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

कथावस्तु का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य किस आधार पर विभाजित किए जाते हैं ?

[3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नाटक का प्रत्येक दृश्य कथावस्तु की ऐसी इकाई है जिसमें मंच पर किसी निश्चित समय और स्थान की क्रिया प्रस्तुत होती है।
- दृश्य-विभाजन का आधार कथानक में समय, स्थान और घटनाक्रम का परिवर्तन है; पात्रों की आवश्यक उपस्थिति भी ध्यान में रखी जाती है।

चरण 1: कथावस्तु की मंचीय इकाइयाँ बनाना कहानी में कथावाचक कम शब्दों में अनेक स्थानों और लंबे समय की घटनाएँ बता सकता है। नाट्य रूपांतरण करते समय पहले घटनाओं का क्रम, उनका स्थान तथा समय निर्धारित किया जाता है। फिर यह देखा जाता है कि कौन-सी घटनाएँ एक ही मंचीय परिस्थिति में लगातार प्रस्तुत हो सकती हैं और कहाँ नई परिस्थिति आरंभ होती है।

चरण 2: परिवर्तन और निरंतरता को साधना समय या स्थान बदलने पर प्रायः नया दृश्य बनता है। घटनाक्रम में निर्णायक मोड़ और पात्रों की उपस्थिति में आवश्यक परिवर्तन भी दृश्य-विन्यास को प्रभावित करते हैं। हर प्रवेश या प्रस्थान को यांत्रिक रूप से नया दृश्य नहीं मानना चाहिए; मुख्य बात मंचीय क्रिया की पूर्णता और कथानक का सुसंगत प्रवाह है। अनावश्यक दृश्य-परिवर्तन प्रस्तुति को खंडित करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर कथावस्तु का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य मुख्यतः समय, स्थान और घटनाक्रम के परिवर्तन के आधार पर विभाजित किए जाते हैं। एक समय और स्थान पर घटने वाली संबद्ध घटनाएँ एक दृश्य में रखी जाती हैं। पात्रों के आवश्यक प्रवेश-प्रस्थान और कथा के मोड़ भी ध्यान में रखे जाते हैं। विभाजन ऐसा हो कि मंचन संभव हो और कथा की निरंतरता बनी रहे।

चरण 4: निष्कर्ष समय, स्थान और घटनाओं की मंचीय संगति दृश्य-विभाजन का आधार है; इसका उद्देश्य कथावस्तु को स्पष्ट और प्रवाहपूर्ण मंचीय रूप देना है।

त्वरित सुझाव: दृश्य-विभाजन के उत्तर में समय, स्थान और घटनाक्रम तीनों लिखें तथा उन्हें मंचन की सुविधा से जोड़ें।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए –

जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में से सबसे पुराना माध्यम कौन-सा है ? उसकी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आधुनिक जनसंचार माध्यमों में मुद्रित माध्यम सबसे पुराना है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख रूप हैं।
- मुद्रित सामग्री की स्थिरता पाठक को अपनी सुविधा से पढ़ने, दोबारा देखने और संदर्भ के लिए सुरक्षित रखने का अवसर देती है।

चरण 1: माध्यम की पहचान और उत्तर की योजना उत्तर में पहले मुद्रित माध्यम का नाम देना है और फिर उसकी प्रमुख विशेषताएँ बतानी हैं। समाचारपत्र तथा पत्रिकाओं के उदाहरण के साथ पाठक की सुविधा, स्थायित्व और विवरण देने की क्षमता को जोड़ना उचित है। विशेषताओं का वर्णन करते समय केवल समाचारपत्रों के नाम गिनाना पर्याप्त नहीं है। यह स्पष्ट करें कि लिखित सामग्री क्षणभर में लुप्त नहीं होती और पाठक किसी तथ्य की जाँच के लिए उसी अंश पर लौट सकता है। मुद्रित सामग्री पढ़ने के लिए साक्षरता आवश्यक है; इसलिए उसकी विशेषताओं में पाठक की भूमिका भी स्पष्ट होनी चाहिए।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना मुद्रित माध्यम है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसमें समाचार, विचार और विश्लेषण लिखित रूप में प्रस्तुत होते हैं। पाठक अपनी रुचि, समय और गति के अनुसार सामग्री पढ़ सकता है तथा कठिन अंश दोबारा समझ सकता है। इसे सुरक्षित रखकर संदर्भ के लिए उपयोग किया जा सकता है। विस्तृत और विश्लेषणात्मक प्रस्तुति इसकी विशेषता है। मुद्रित सामग्री के उपभोग के लिए साक्षरता आवश्यक है; तस्वीरें और रेखाचित्र सामग्री को अधिक स्पष्ट बनाते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः मुद्रित माध्यम सबसे पुराना आधुनिक जनसंचार माध्यम है; अपनी सुविधा से पढ़ना, पुनर्पाठ, संग्रह और विस्तृत प्रस्तुति इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: मुद्रित माध्यम की विशेषताएँ बताते समय पाठक की सुविधा, पुनर्पाठ और स्थायी संदर्भ को अवश्य जोड़ें।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए –

पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं ? पत्रकारों के विभिन्न प्रकारों का विस्तार से उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, लेख और अन्य सामग्री तैयार करना पत्रकारीय लेखन है। इसमें तथ्य की शुद्धता, स्पष्टता और जनरुचि का ध्यान रखा जाता है।
- संस्थान से संबंध के आधार पर पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र होते हैं। अंशकालिक पत्रकार को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 1: परिभाषा और वर्गीकरण की योजना पहले पत्रकारीय लेखन का उद्देश्य और स्वरूप स्पष्ट करना है। इसके बाद तीनों प्रकार के पत्रकारों के काम करने के ढंग में अंतर बताना है। पूर्णकालिक पत्रकार का संस्थान से नियमित संबंध होता है, अंशकालिक पत्रकार आवश्यकतानुसार समाचार देता है और स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्थान का नियमित कर्मचारी नहीं होता। इस प्रश्न में पत्रकारों का वर्गीकरण विषय या समाचार क्षेत्र के आधार पर नहीं, उनके कार्यसंबंध के आधार पर करना है।

चरण 2: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार माध्यमों के लिए समाचार, रिपोर्ट, लेख, साक्षात्कार आदि लिखना पत्रकारीय लेखन कहलाता है। इसका आधार तथ्यपरकता और जनरुचि है। पत्रकार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संस्थान का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है। अंशकालिक पत्रकार अर्थात स्ट्रिंगर किसी संस्थान के लिए आवश्यकतानुसार समाचार भेजता है और उसे काम के अनुसार पारिश्रमिक मिलता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संस्थान से नियमित रूप से बँधा नहीं होता; वह विभिन्न समाचार माध्यमों के लिए लेखन करता है और स्वीकृत सामग्री पर पारिश्रमिक प्राप्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पत्रकारीय लेखन समाचार माध्यमों के लिए तथ्याधारित सामग्री तैयार करना है। कार्यसंबंध के आधार पर पत्रकार पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र होते हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों प्रकार याद रखने के लिए नियमित वेतन, आवश्यकतानुसार समाचार और अनेक संस्थानों के लिए लेखन का अंतर स्पष्ट करें।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए –

समाचार लेखन की शैली का विस्तार से वर्णन करते हुए लिखिए कि यह शैली समाचार-लेखन की मानक शैली कैसे बनी। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के तथ्य उनके महत्त्व के घटते क्रम में प्रस्तुत होते हैं। सबसे आवश्यक सूचना आरंभ में और कम आवश्यक विवरण अंत में आते हैं।
- समाचार का आरंभिक अनुच्छेद इंट्रो या मुखड़ा कहलाता है। इसमें घटना का मुख्य तथ्य रहता है; आगे पृष्ठभूमि तथा अन्य विवरण दिए जाते हैं।

चरण 1: शैली की बनावट समझना सामान्य कथा में घटनाएँ आरंभ से अंत तक क्रमशः आगे बढ़ती हैं, किंतु समाचार में परिणाम या सबसे महत्त्वपूर्ण घटना पहले बताई जाती है। मुखड़े में क्या, कौन, कहाँ और कब जैसे प्रमुख प्रश्नों की आवश्यक सूचना दी जाती है। इसके बाद कैसे और क्यों सहित शेष प्रासंगिक विवरण आते हैं। सभी छह ककारों को एक ही वाक्य में ठूँसना आवश्यक नहीं है।

चरण 2: मानक बनने का कारण पहचानना अमेरिका के गृहयुद्ध के दौरान संवाददाता तार द्वारा समाचार भेजते थे। तार सेवा बाधित होने की आशंका के कारण वे सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले भेजते थे। इससे संदेश अधूरा रहने पर भी मुख्य समाचार मिल जाता था। संपादन में अंत से कम महत्त्व के अंश काटना भी आसान हुआ। पाठक की सुविधा और स्थान की बचत ने इस शैली को प्रचलित मानक बनाया।

चरण 3: लगभग 80 शब्दों में उत्तर समाचार लेखन की मानक शैली उल्टा पिरामिड है। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य मुखड़े में, फिर उनका विस्तार और अंत में कम महत्त्वपूर्ण विवरण आते हैं। अमेरिकी गृहयुद्ध में संवाददाता तार सेवा टूटने की आशंका से मुख्य सूचना पहले भेजते थे। इस व्यावहारिक आवश्यकता से शैली विकसित हुई। पाठक आरंभ में ही मुख्य घटना जान लेता है। संपादक स्थान की

कमी होने पर नीचे से अंश काट सकता है, जबकि समाचार का मूल अर्थ सुरक्षित रहता है। इन सुविधाओं ने इसे मानक बनाया।

चरण 4: निष्कर्ष उल्टा पिरामिड शैली महत्त्व के घटते क्रम पर आधारित है। तार संचार की व्यावहारिक आवश्यकता और पाठक तथा संपादक की सुविधा ने इसे समाचार लेखन की मानक शैली बनाया।

त्वरित सुझाव: उत्तर में मुखड़ा, महत्त्व का घटता क्रम, गृहयुद्ध में तार संचार और नीचे से संपादन की सुविधा अवश्य जोड़ें।

10(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता 'प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणि-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की कोशिश है।' सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंश राय बच्चन की कविता में दिन का ढलना प्राकृतिक परिवर्तन है, जिसकी प्रतिक्रिया पथिक, पक्षियों और कवि की मन:स्थिति में दिखाई देती है।
- घर पर प्रतीक्षा करने वाला प्रियजन उत्साह देता है; उसके अभाव की अनुभूति व्यक्ति को शिथिल और व्याकुल करती है।

चरण 1: पथिक और पक्षियों की प्रतिक्रिया संध्या निकट देखकर पथिक गंतव्य तक पहुँचने के लिए अपनी गति बढ़ाता है। पक्षियों को घोंसलों में प्रतीक्षा करते बच्चों की चिंता होती है। बच्चों का स्मरण उनके पंखों को चंचल बना देता है। इस प्रकार दिन का ढलना केवल बाहरी दृश्य नहीं रहता; वह मिलन की उत्कंठा तथा वात्सल्य को भी प्रकट करता है।

चरण 2: कवि की भिन्न मन:स्थिति कवि के मन में यह प्रश्न उठता है कि उसके आने की प्रतीक्षा कौन कर रहा है। प्रियजन की प्रतीक्षा के अभाव का बोध उसके कदम शिथिल करता है और हृदय को व्याकुल बनाता है। एक ही प्राकृतिक परिवर्तन से किसी में उत्साह और किसी में उदासी पैदा होती है। इसी से प्राणियों के भीतर की संवेदनाओं का परिचय मिलता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर दिन ढलते ही पथिक की गति बढ़ती है। घोंसलों में प्रतीक्षारत बच्चों की याद पक्षियों के पंखों को चंचल करती है। इसके विपरीत, कवि को अपनी प्रतीक्षा करने वाले का अभाव व्याकुल करता है और उसके कदम शिथिल पड़ते हैं। इस प्रकार संध्या का प्राकृतिक परिवर्तन प्राणियों के प्रेम, वात्सल्य, मिलन की उत्कंठा और अकेलेपन की धड़कनों को उजागर करता है।

चरण 4: निष्कर्ष कविता में ढलती संध्या के माध्यम से पथिक की तत्परता, पक्षियों का वात्सल्य और कवि का अकेलापन व्यक्त होता है; इसलिए वह प्राणियों के धड़कते हृदय को सुनने का प्रयास है।

त्वरित सुझाव: प्राकृतिक परिवर्तन के साथ पथिक, पक्षी और कवि की अलग प्रतिक्रिया जोड़कर कथन सिद्ध करें।

10(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –

'यह घर, वह घर
सब घर एक कर देने के माने
बच्चा ही जाने।'

'कविता के बहाने' से उद्धृत इन पंक्तियों के संदर्भ में लिखिए कि कवि ने बच्चों की किस विशेषता और अपनी किस असमर्थता का उल्लेख किया है ? कविता और बच्चों में क्या समानता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता में बच्चों का खेल भेदभाव और सीमाओं से मुक्त आत्मीयता का प्रतीक है।

- कविता की कल्पना भी सीमित घर, व्यक्ति या समुदाय से आगे जाकर सबको अपने भावलोक में शामिल करती है।

चरण 1: बच्चों की विशेषता और कवि की असमर्थता बच्चे खेलते समय अपने और पराए घर का भेद नहीं रखते। वे सहज आत्मीयता से सबको साथ लेते हैं और अलग घरों को खेल की एक दुनिया में बदल देते हैं। इस निष्कपट, भेदरहित अनुभव का वास्तविक अर्थ बच्चा ही जानता है। कवि स्वीकार करता है कि वह वयस्क बुद्धि से बच्चों की इस सहजता का पूरा रहस्य नहीं समझ सकता। यह उनकी निश्छलता के प्रति उसकी विनम्र स्वीकृति है।

चरण 2: कविता से समानता स्पष्ट करना बच्चों के खेल की तरह कविता भी बंधी हुई परिधि स्वीकार नहीं करती। कल्पना और संवेदना के सहारे वह अपना और पराया, यह घर और वह घर जैसे विभाजन पार करती है। दोनों में सृजन का आनंद, स्वतंत्रता और सबको जोड़ने की शक्ति है। समानता का आशय केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सीमाओं से मुक्त मानवीय आत्मीयता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर बच्चे खेल में अपने-पराए और घरों के भेद मिटाकर सबको एक कर देते हैं। कवि उनकी सहज, निष्कपट आत्मीयता को पूरी तरह समझ पाने में अपनी असमर्थता स्वीकार करता है। कविता भी बच्चों की तरह कल्पना और संवेदना के सहारे सीमाएँ लाँघती है। दोनों का संसार बंधनरहित, सृजनशील और आनंदमय है, जो मनुष्यों को जोड़ता तथा भेदभाव मिटाता है।

चरण 4: निष्कर्ष बच्चों की विशेषता भेदरहित सहज आत्मीयता है; कवि उसका पूरा मर्म जानने में असमर्थता स्वीकारता है। कविता और बच्चे दोनों कल्पना की स्वतंत्रता से सीमाएँ मिटाकर सबको जोड़ते हैं।

त्वरित सुझाव: तीनों माँगें अलग पहचानें: बच्चों की विशेषता, कवि की असमर्थता और कविता से समानता।

10(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए –
'बादल राग' कविता के आधार पर बादलों के आगमन से प्रकृति में हुए परिवर्तनों का वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बादलों का गर्जन और वर्षा प्रकृति में नई चेतना तथा सृजन की संभावना जगाते हैं।
- कविता में छोटे पौधों की प्रसन्नता और विशाल वृक्षों की व्याकुलता का विरोध सामाजिक अर्थ भी रखता है।

चरण 1: प्राकृतिक दृश्य को समझना बादलों का गर्जन आकाश को भर देता है। वर्षा से धरती का सुप्त जीवन जागता है और छोटे-छोटे पौधे हरे-भरे होकर लहराने लगते हैं। कविता में पौधों का हाथ हिलाकर बादलों को बुलाना मानवीकरण है। वे बादलों के आने से डरते नहीं, क्योंकि वर्षा उनके विकास का आधार है। यहाँ प्रकृति गतिहीन दृश्य नहीं, उत्साह और आशा से भरा जीवंत संसार है।

चरण 2: विपरीत प्रतिक्रियाओं का अर्थ बादलों के वज्र जैसे प्रहार से बड़े पर्वत और ऊँचे वृक्ष विचलित होते हैं, जबकि छोटे पौधे हँसते हुए उनका स्वागत करते हैं। इस अंतर से स्पष्ट होता है कि परिवर्तन शक्तिशाली और जमे हुए वर्ग के लिए भय का कारण, किंतु दबे हुए जीवन के लिए मुक्ति और पोषण का अवसर है। उत्तर में इसी आधार पर प्रकृति के दृश्य को कविता की परिवर्तनकारी भावना से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष बादलों के आगमन से आकाश गर्जन से गूँज उठता है और वर्षा धरती में नया जीवन जगाती है। छोटे-छोटे पौधे हरे-भरे होकर लहराते तथा हाथ हिलाते हुए बादलों का स्वागत करते हैं। इसके विपरीत ऊँचे वृक्ष और पर्वत वज्रपात से विचलित होते हैं। इस प्रकार प्रकृति में उल्लास, हलचल और परिवर्तन का वातावरण बन जाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में छोटे पौधों का उल्लास और विशाल वृक्षों का भय साथ रखकर प्रकृति का विरोधी चित्र स्पष्ट कीजिए।

11(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता के आधार पर लिखिए कि मीडिया कर्मी अपने कार्यक्रम का अंत एक खीझ भरी मुस्कुराहट के साथ क्यों करता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को कार्यक्रम की लोकप्रियता का साधन बनाने पर व्यंग्य है।
- खीझ और मुस्कुराहट का मेल वास्तविक निराशा तथा पर्दे पर बनाए गए व्यवहार का अंतर बताता है।

चरण 1: कार्यक्रम का उद्देश्य पहचानना मीडियाकर्मी अपाहिज से बार-बार पीड़ादायक प्रश्न पूछकर उसे रुलाना चाहता है। उसकी रुचि व्यक्ति की सहायता में कम और दर्शकों के सामने प्रभावशाली करुण दृश्य प्रस्तुत करने में अधिक है। वह चाहता है कि अपाहिज की वेदना कैमरे में ऐसी पकड़ी जाए जिससे कार्यक्रम का भावनात्मक प्रभाव बढ़े।

चरण 2: अंत की प्रतिक्रिया समझना अपाहिज अपेक्षित ढंग से अपनी पीड़ा प्रदर्शित नहीं करता और कार्यक्रम का समय समाप्त होने लगता है। मीडियाकर्मी की योजना सफल नहीं होती, इसलिए वह खीझता है। कैमरे के सामने कार्यक्रम का समापन करते समय मुस्कुराना उसकी पेशेगत औपचारिकता है। उसकी मुस्कान संवेदना की नहीं, असफल प्रयास को ढकने की है।

चरण 3: निष्कर्ष मीडियाकर्मी अपाहिज को रुलाकर दर्शकों के सामने उसकी पीड़ा का करुण दृश्य दिखाना चाहता है। अपेक्षित भावनात्मक प्रदर्शन न मिलने से वह खीझ जाता है। कार्यक्रम समाप्त करते समय कैमरे के सामने औपचारिक मुस्कान बनाए रखना पड़ता है; इसलिए उसकी मुस्कुराहट में खीझ झलकती है।

त्वरित सुझाव: खीझ का कारण अपेक्षित करुण दृश्य न मिलना और मुस्कुराहट का कारण कैमरे की औपचारिकता बताइए।

11(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –

'बात सीधी थी पर' कविता के संदर्भ में लिखिए कि भाषा को चमत्कारी/प्रभावशाली बनाने के लिए कवि क्या-क्या प्रयोग करता है ?

[2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सहज बात को अनावश्यक भाषाई सजावट में बाँधने से उसका आशय अस्पष्ट हो सकता है।
- कविता भाषा के सहज प्रयोग और कथ्य की स्पष्टता को प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति का आधार मानती है।

चरण 1: कवि के प्रयोग पहचानना कवि सरल बात को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए भाषा को उलटता-पलटता है। वह शब्दों का क्रम बदलता है, उन्हें तोड़ता-मरोड़ता है और नए ढंग से जोड़ने का प्रयास करता है। उसका ध्यान बात की सहज अभिव्यक्ति से हटकर भाषा के चमत्कार पर केंद्रित हो जाता है।

चरण 2: प्रयोगों का परिणाम समझना शब्दों से अत्यधिक छेड़छाड़ के कारण सीधी बात उलझ जाती है। भाषा को अनावश्यक ढंग से कसने का प्रयास वैसा ही है जैसे पेंच को जरूरत से ज्यादा कसने पर उसकी पकड़ समाप्त हो जाए। इसलिए उत्तर में केवल सजावट का उल्लेख पर्याप्त नहीं; उस सजावट के कारण अर्थ और सहजता के खोने का संकेत भी देना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष कवि सीधी बात को चमत्कारी बनाने के लिए भाषा को उलटता-पलटता, शब्दों को तोड़ता-मरोड़ता और नए क्रम में जोड़ता है। वह अभिव्यक्ति को अनावश्यक रूप से कसता है। इन प्रयासों से भाषा उलझ जाती है और बात की सहजता तथा स्पष्टता खो जाती है।

त्वरित सुझाव: भाषा को उलटने-पलटने और तोड़ने-मरोड़ने के प्रयोग लिखकर उनके कारण अर्थ के उलझने का परिणाम जोड़िए।

11(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए –
'बगुलों के पंख' कविता की पंक्ति 'चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें' – से कवि का क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में काले बादलों की पृष्ठभूमि पर उड़ते सफेद बगुलों का दृश्य कवि को मुग्ध करता है।
- आँखें चुरा लेने का आशय किसी सुंदर दृश्य का दृष्टि और मन को पूरी तरह आकर्षित कर लेना है।

चरण 1: दृश्य की पृष्ठभूमि समझना काले बादलों से भरे आकाश में उड़ते बगुलों के सफेद पंख अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं। श्वेत पंखों और श्याम बादलों का रंग-विरोध दृश्य के आकर्षण को बढ़ाता है। कवि का ध्यान इस क्षणिक प्राकृतिक सौंदर्य पर ठहर जाता है और वह उसे एकाग्र होकर देखता है।

चरण 2: पंक्ति का भाव स्पष्ट करना आँखें चुराकर ले जाने का शाब्दिक अर्थ यहाँ उपयुक्त नहीं है। कवि कहना चाहता है कि बगुलों की उड़ान और उनके पंखों का सौंदर्य उसकी दृष्टि को बाँध लेता है। वह चाहकर भी उससे आँखें नहीं हटा पाता। यह कथन प्रकृति के सौंदर्य से उत्पन्न तन्मयता और मुग्धता को व्यक्त करता है।

चरण 3: निष्कर्ष काले बादलों के बीच उड़ते बगुलों के उजले पंख कवि को अत्यंत सुंदर लगते हैं। उनका आकर्षण उसकी दृष्टि को बाँध लेता है। वह उस दृश्य से आँखें नहीं हटा पाता। पंक्ति में कवि की सौंदर्य-मुग्धता और प्रकृति के प्रति तन्मयता व्यक्त हुई है।

त्वरित सुझाव: आँखें चुराने का अर्थ दृष्टि को बाँध लेना लिखिए और काले बादलों तथा सफेद पंखों का संदर्भ जोड़िए।

12(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –
'भक्तिन' पाठ के आधार पर भारतीय ग्रामीण समाज में लड़के-लड़कियों में किए जाने वाले भेद-भाव का वर्णन कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भक्तिन के परिवार में भोजन और श्रम के असमान बँटवारे से लड़के-लड़कियों में भेदभाव प्रकट होता है।
- पुत्र-जन्म को प्रतिष्ठा और पुत्रियों की माँ को उपेक्षा मिलना पितृसत्तात्मक मानसिकता का परिचायक है।

चरण 1: परिवार में स्थिति का आधार समझना भक्तिन की जिठानियाँ पुत्रों की माँ होने के कारण परिवार में सम्मान और सुविधा पाती हैं। भक्तिन की बेटियाँ होने से उसके साथ उपेक्षापूर्ण व्यवहार होता है। स्त्री का मूल्य उसके व्यक्तित्व या परिश्रम से नहीं, बल्कि पुत्र पैदा करने से आँका जाता है। यह प्रसंग ग्रामीण समाज में गहराई तक बैठी पुत्र-प्राथमिकता को सामने लाता है।

चरण 2: भोजन और काम में भेदभाव दिखाना जिठानियों के लड़कों को दूध की मलाई और राब के साथ गाढ़ा दूध मिलता है, जबकि भक्तिन की बेटियों को चने-बाजरे की घुघरी और मट्ठा मिलता है। लड़के धूल उड़ाते घूमते हैं और लड़कियों से घर के अनेक काम कराए जाते हैं। पोषण और अवकाश लड़कों का अधिकार मान लिए जाते हैं, पर लड़कियों के हिस्से श्रम तथा अभाव आते हैं। इस ठोस तुलना से पाठ में वर्णित भेदभाव स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन के परिवार में पुत्रों की माताओं को सम्मान मिलता है, जबकि बेटियों की माँ भक्तिन उपेक्षित रहती है। जिठानियों के लड़के दूध-मलाई खाते और खेलते हैं। भक्तिन की बेटियाँ चने-बाजरे की घुघरी तथा मट्ठे पर रहतीं और घर के काम करती हैं। भोजन, श्रम और सम्मान की यह असमानता ग्रामीण समाज की पुत्र-प्रधान मानसिकता प्रकट करती है।

त्वरित सुझाव: लड़कों के दूध-मलाई और लड़कियों की घुघरी-मट्ठे की तुलना के साथ काम तथा सम्मान की असमानता भी लिखिए।

12(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'बाजार दर्शन' पाठ से ली गई पंक्ति – 'जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है।' – में किस बल की बात कही गई है ? इस बल से युक्त और हीन व्यक्ति की विशेषताएँ लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न आत्मसंयम, संतोष और आवश्यकता की स्पष्ट समझ का संबंध समझने की क्षमता जाँचता है।
- पाठ में मनुष्य की शक्ति का आधार बाहरी वैभव नहीं, अपने मन और इच्छाओं पर नियंत्रण है।

चरण 1: उक्त बल का आशय यहाँ आत्मबल अर्थात् मन के संयम और संतोष की शक्ति का संकेत है। व्यक्ति आवश्यकताओं को पहचानकर अनावश्यक आकर्षण से बचता है। केवल धन होने से यह शक्ति नहीं आती; लालसा से मुक्त विवेक इसके लिए आवश्यक है। यही विवेक बाजार के जादू से रक्षा करता है।

चरण 2: दोनों प्रकार के व्यक्तियों में अंतर आत्मबल वाला व्यक्ति तृप्त, स्वतंत्र और अपनी वास्तविक जरूरतों के प्रति सजग रहता है। वह बाजार की चमक देखकर निरर्थक खरीदारी नहीं करता। इसके विपरीत, आत्मबलहीन व्यक्ति अधिकाधिक वस्तुएँ जमा करना चाहता है। उसकी तृष्णा बढ़ती जाती है और उपलब्ध वस्तुओं के बावजूद उसे अभाव तथा असंतोष अनुभव होता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर यहाँ आत्मसंयम और संतोष के बल की बात है। इससे युक्त व्यक्ति अपनी आवश्यकताएँ पहचानता है, अनावश्यक संग्रह नहीं करता और बाजार के आकर्षण से विचलित नहीं होता। इसके विपरीत, आत्मबलहीन व्यक्ति तृष्णा तथा संग्रह की इच्छा से ग्रस्त रहता है। वह वस्तुओं के पीछे दौड़ता है, दूसरों से अपनी तुलना करता है और पर्याप्त साधन होते हुए भी अतृप्त रहता है।

चरण 4: निष्कर्ष उक्त बल आत्मसंयम और संतोष का है; इसकी उपस्थिति मनुष्य को स्वतंत्र और इसका अभाव तृष्णाग्रस्त बनाता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले बल का नाम लिखें, फिर संतुष्ट और संग्रहशील व्यक्ति का अंतर स्पष्ट करें।

12(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए –

'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर लिखिए कि आज़ादी के वर्षों बाद भी लेखक का मन दुःखी क्यों था ? उसके मन में किस तरह के प्रश्न उठ रहे थे ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न पाठ में व्यक्त सामाजिक चिंता और विकास की घोषणाओं तथा वास्तविक उपलब्धियों के अंतर को समझने पर आधारित है।
- लेखक की चिंता सामान्य जनता के जीवन, खेती और पानी जैसी बुनियादी जरूरतों से जुड़ी है।

चरण 1: लेखक के दुःख का कारण स्वतंत्रता के बाद देश में बड़ी योजनाएँ बनीं और बहुत धन लगाया गया, किंतु अपेक्षित जनकल्याण नहीं हुआ। किसानों को पर्याप्त पानी नहीं मिला और सामान्य लोगों का जीवन अभावग्रस्त बना रहा। इसलिए लेखक को लगा कि राष्ट्रीय संसाधनों का लाभ जरूरतमंदों तक नहीं पहुँच रहा है।

चरण 2: मन में उठते प्रश्न लेखक पूछता है कि इतना पैसा आखिर कहाँ जाता है। जिस प्रकार वर्षा का पानी धरती की प्यास बुझाए बिना बह जाता है, उसी प्रकार योजनाओं का धन जनजीवन तक क्यों नहीं पहुँचता? वह योजनाओं के परिणाम, उनके क्रियान्वयन और सार्वजनिक धन के उपयोग पर प्रश्न करता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर आज़ादी के वर्षों बाद भी जनता के अभाव और किसानों की पानी की समस्या दूर नहीं हुई थी। बड़ी योजनाओं और भारी धनराशि के बावजूद अपेक्षित विकास न देखकर लेखक दुःखी था। उसके मन में प्रश्न उठते थे कि योजनाओं का इतना पैसा कहाँ चला जाता है, उसका लाभ जनता तक क्यों नहीं पहुँचता और लोगों की जीवनरूपी धरती प्यासी क्यों रह जाती है।

चरण 4: निष्कर्ष लेखक का दुःख योजनाओं के लाभ से वंचित जनता के लिए था; उसके प्रश्न सार्वजनिक धन और विकास के वास्तविक परिणामों पर केंद्रित थे।

त्वरित सुझाव: योजनाओं, खर्च और जनता की दशा को जोड़कर लिखें; उत्तर को केवल वर्षा की कमी तक सीमित न रखें।

13(क). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –
'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए कि महामारी फैलने के बाद गाँव में कैसा दृश्य उपस्थित हो गया था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न कहानी में महामारी से उत्पन्न भय, मृत्यु और ग्रामीण जीवन की असहायता का चित्रण जाँचता है।
- दृश्य बताते समय वातावरण के साथ पीड़ित मनुष्यों की स्थिति भी स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: गाँव की दशा पहचानना महामारी ने गाँव में मृत्यु और भय का वातावरण बना दिया था। परिवारों में लगातार मौतें हो रही थीं और लोग दुर्बल तथा असहाय थे। बीमारी के साथ गरीबी और साधनों के अभाव ने संकट को अधिक गहरा बना दिया।

चरण 2: वातावरण का चित्रण रात के सन्नाटे में सियारों की आवाजें तथा उल्लुओं की डरावनी ध्वनियाँ भय बढ़ाती थीं। झोंपड़ियों से कराहने और रोने की आवाजें सुनाई देती थीं। इन विवरणों से गाँव का निर्जन, शोकाकुल और आतंकित रूप सामने आता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर महामारी से गाँव में मृत्यु का आतंक छा गया था। घरों में रोगियों की कराह और परिजनों का रुदन सुनाई देता था। रात का सन्नाटा, सियारों की आवाजें और उल्लुओं की ध्वनियाँ भय बढ़ाती थीं। पूरा गाँव शोकाकुल और असहाय था।

चरण 4: निष्कर्ष महामारी के बाद गाँव मृत्यु, बीमारी, करुण रुदन और भयावह सन्नाटे से भर गया था।

त्वरित सुझाव: दृश्य स्पष्ट करने के लिए कराह, रुदन और रात के सन्नाटे जैसे पाठगत विवरण जोड़ें।

13(ख). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –
'शिरीष के फूल' पाठ के संदर्भ गांधी जी के व्यक्तित्व के लिए प्रयुक्त कोमल और कठोर विशेषणों का आशय स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न गांधीजी के व्यक्तित्व में संवेदनशीलता और दृढ़ता के सामंजस्य को स्पष्ट करने पर आधारित है।
- कोमल और कठोर विशेषण अलग गुणों के संकेत हैं; दोनों मिलकर व्यक्तित्व की पूर्णता दिखाते हैं।

चरण 1: कोमलता का अर्थ गांधीजी की कोमलता उनकी करुणा, अहिंसा और मानवप्रेम में प्रकट होती थी। वे पीड़ितों के दुःख से द्रवित होते और दूसरों की रक्षा के लिए अपना सुख त्याग देते थे। यह संवेदनशीलता शिरीष के फूलों की मृदुता के समान थी।

चरण 2: कठोरता का अर्थ कठोरता उनके सत्यनिष्ठ संकल्प, आत्मानुशासन और सिद्धांतों पर दृढ़ रहने का गुण था। कठिन परिस्थितियाँ उन्हें विचलित नहीं करती थीं। प्रतिकूलता में भी वे लोककल्याण के मार्ग पर अडिग रहते थे।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर गांधीजी करुणा, अहिंसा और मानवप्रेम के कारण कोमल थे; दूसरों का दुःख उन्हें व्यथित करता था। सत्य, सिद्धांत और संकल्प के प्रति अडिग रहने के कारण वे कठोर थे। विपरीत परिस्थितियों में भी उनकी दृढ़ता और जनकल्याण की भावना बनी रहती थी।

चरण 4: निष्कर्ष कोमलता संवेदनशील हृदय की और कठोरता अटल संकल्प तथा सिद्धांतनिष्ठा की परिचायक है।

त्वरित सुझाव: कोमलता को करुणा से और कठोरता को सिद्धांतों की दृढ़ता से जोड़कर दोनों अर्थ अलग स्पष्ट करें।

13(ग). पद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में लिखिए –
भक्तिन की पाक-कला की योग्यता के विषय में लिखिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यह प्रश्न भक्तिन की भोजन बनाने की योग्यता और उसकी ग्रामीण जीवनशैली के संबंध को समझने पर आधारित है।
- चरित्र की विशेषता बताते समय उसकी दक्षता के साथ उसकी सीमा भी पाठ के आधार पर स्पष्ट करनी चाहिए।

चरण 1: पाक-कला की प्रकृति भक्तिन की पाक-कला ग्रामीण भोजन और अपनी परिचित विधियों पर आधारित थी। वह मोटी रोटियाँ और गाढ़ी दाल जैसे सादे भोजन बनाती थी। उसके लिए भोजन का प्रमुख गुण पेट भरना और पौष्टिक होना था।

चरण 2: योग्यता और सीमा उसे अपने बनाए भोजन पर विश्वास था, पर वह विविध शहरी व्यंजन बनाने में निपुण नहीं थी। लेखिका के स्वाद के अनुसार स्वयं को बदलने के स्थान पर वह अपने ढंग के भोजन को ही उचित मानती थी। इस व्यवहार में उसका आत्मविश्वास और अपने ग्रामीण संस्कारों के प्रति आग्रह प्रकट होता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर भक्तिन ग्रामीण भोजन बनाने में कुशल थी। वह मोटी रोटियाँ और गाढ़ी दाल जैसे सादे, पेट भरने वाले व्यंजन बनाती थी। विविध शहरी पकवान उसकी विशेषता नहीं थे। अपनी पाक-कला पर उसे इतना विश्वास था कि वह अपना भोजन ही श्रेष्ठ मानती थी।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन की पाक-कला सादे ग्रामीण भोजन तक केंद्रित थी और उसे अपनी पद्धति पर दृढ़ विश्वास था।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ग्रामीण व्यंजनों की दक्षता और अपने ढंग पर उसके आग्रह, दोनों का उल्लेख करें।